www.thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 02 अक्टूबर 2016 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 02 अक्टूबर 2016 से 08 अक्टूबर 2016

आश्विन. शु.–02 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 42, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पश्चिम बंगाल ने किया वेद प्रचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पश्चिम बंगाल के सभी विद्यालयों की ईकाइयों आर्य युवा समाज द्वारा श्रावणी पर्व से श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। इसके अंतर्गत प्रत्येक दिन हवन, भजन, प्रवचन का आयोजन किया गया।

इस शुभ कार्य में बड़ी संख्या में अभिभावकों ने भाग लिया! इस बार आर्य युवा समाज डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर में चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा और वेदोपदेशक के रूप में महात्मा प्रेमभिक्षु जी, (वानप्रस्थी) उपप्रधान, सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, पश्चिम बंगाल ने स्थान ग्रहण किया। उन्होंने छात्रों और अभिभावकों को वेदों का महत्त्व समझाया और कई यजुर्वेद के मंत्रों की व्याख्या भी की। यजमान के पद पर विराजमान श्रीमती पापिया मुखर्जी (प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पश्चिम बंगाल) ने आर्य समाज के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि समाज में व्याप्त अंधविश्वास और पाखंड जैसी बुराइयों को जड़ से मिटाने का आर्य समाज ने सफल प्रयास किया है। हम सबको भी जितना हो सके आर्य समाज से जुड़कर जात-पात, दहेज–प्रथा, भ्रष्टाचार जैसी जटिल समस्याओं से समाज को मुक्त करने का प्रयास करना चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह का समापन सभी स्कूलों ने मिलकर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, रानीगंज में किया। समापन कार्यक्रम में सबसे पहले यज्ञ, भजन, प्रवचन, हुआ इसके पश्चात् विभिन्न विद्यालयों के बीच गीता श्लोक गायन प्रतियोगिता और (वेद, आर्य समाज और डी.ए.वी. विद्यालय–इन तीनों विषयों पर) वैदिक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया, जिसमें गीता श्लोक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दिक्षा द्विवेदी, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आसनसोल, द्वितीय स्थान स्वीटी मंडल, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बाँकुड़ा और तृतीय स्थान अन्वेषा मित्रा, डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर को प्राप्त हुआ। वैदिक प्रश्नोत्तरी में प्रथम स्थान डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, आसनसोल, द्वितीय स्थान डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, रानीगंज और तृतीय डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर के छात्रों ने प्राप्त किया। अंत में पुरस्कार वितरण के पश्चात् शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

## डी. ए. वी. बहरोड़ ने मनाया वेद प्रचार सप्ताह

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल बहरोड़ के द्वारा ''वेद प्रचार सप्ताह'' का आयोजन किया गया है।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय भाषण में आर्य संन्यासी स्वामी विश्वमुनि जी ने कहा कि वेदों के स्वाध्याय व श्रवण करने से व्यक्ति के अन्दर सच्ची मानवता का संचार होता है, राक्षसी प्रवृत्ति का नाश होता है इसीलिए ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में वेद के पढ़ने और पढ़ाने को श्रेष्ठ पुरूषों का धर्म बताया है।

दूसरे दिन वनखण्डी आश्रम के महंत स्वामी रामदेव जी ने कहा आर्यसमाज ने समाज से दहेज प्रथा, बाल–विवाह, अन्धविश्वास, कन्या भ्रूण हत्या आदि कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वामी धर्मवेश जी संचालक गौशाला बूढ़ी बाबल, ने वेद प्रचार सप्ताह को महान पवित्र कर्म बताते हुए डी.ए.वी. संस्था तथा डी.ए.वी. प्रबंधन का आभार व धन्यवाद व्यक्त किया।

इसी क्रम में महान क्रान्तिकारी शहीद उधम सिंह की पुण्यतिथि समारोह मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन से किया गया। 30 विद्यार्थियों ने देश–भक्ति समूह गान, एकल गान व शहीद उधम सिंह पर लघु नाटिका की प्रेरणास्पद प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमान् राम अवतार पुरुषार्थी जी थे।

लायंस क्लब बहरोड़ व संस्कार भारती संस्था के सदस्यों ने यज्ञ में आहुतियाँ दीं तत्पश्चात विद्यालय में पौधारोपण किया गया जिसमें 31 पौधे लगाए गए और इसी दिन विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क नेत्र चिकित्सा, दंत चिकित्सा व सामान्य जाँच के शिविरों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के छठे दिन बनखण्डी आश्रम के संस्थापक आर्य संन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने वेदानुसार कर्मफल सिद्धान्त विषय पर अत्यंत गंभीरता व सरलता पूर्वक विस्तार से प्रकाश डाला।

समापन समारोह के अवसर पर स्वामी सुधबोध जी संचालक, गुरुकुल झज्जर की अध्यक्षता में बृहद् यज्ञ व 128 छात्र–छात्राओं का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया, उन्हें सत्य के मार्ग पर चलने का संकल्प दिलाया गया। विद्यालय के प्राचार्य व आर्य युवासमाज राजस्थान के मंत्री राजेन्द्र गौतम ने देश की आजादी में आर्यसमाज की भूमिका, 130 वर्षो से डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं का देश की आजादी, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के संरक्षण व उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान तथा विद्यालय में होने वाली गतिविधियों के विषय में संक्षेप में प्रकाश डालते हुए समस्त गणमान्य अतिथियों का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

संपादक – पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org



ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 02 अक्टूबर 2016 से 08 अक्टूबर 2016

# सर्वाङ्ग-सुन्दर बनें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**सं वर्चसा पयसा सं तनूभिः, अगन्महि मनसा सं शिवेन।**
**त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायो, अनु मार्ष्टु तन्वो यद् विलिष्टम्।।**

यजु. २.२४

ऋषिः **वामदेवः**। देवता **त्वष्टा**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● [हम] (**वर्चसा**) ब्रह्मवर्चस से [और], (**पयसा**) दूध से, माधुर्य से, (**सम् अगन्महि**) संयुक्त हों, (**तनूभिः**) शरीरों से, (**सम्**) संयुक्त हों, (**शिवेन मनसा**) शिव मन से, (**सम्**) संयुक्त हों।, (**सुदत्रः**) शुभ दानी, (**त्वष्टा**) जगद्–रचयिता परमेश्वर, (**रायः**) [धन, चक्रवर्ती राज्य, सुख, आरोग्य आदि] ऐश्वर्यों को, (**वि–दधातु**) प्रदान करे, [और], (**यत्**) जो, (**तन्वः**) शरीर का, (**विलिष्टं**) त्रुटिपूर्ण अंग है, उसे, (**अनु मार्ष्टु**) परिमार्जित करे।

● हम चाहते हैं कि हम संसार में सर्वांग–सुन्दर बनकर रहें, षोडशकल चन्द्र के समान परिपूर्ण बनकर निवास करें। हमारे अन्दर ब्रह्मवर्चस हो, आत्मिक तेज हो, जिसके सम्बन्ध में कभी ऋषि विश्वामित्र ने कहा था कि ब्रह्म–तेज ही सच्चा बल है, अन्य बल उसके सम्मुख निःसार है। वह ब्रह्म–तेज का ही बल है, जिसके द्वारा शरीर से दुर्बल होते हुए भी अनेक मानव कोटि–कोटि जनों को अपने चरणों में झुकाते रहे हैं। साथ ही हमें 'पयः' भी प्राप्त हो। 'पयस्' शब्द दूध का वाचक होता हुआ भी रस, माधुर्य, शान्ति, निर्मलता, निश्छलता, सात्त्विकता आदि का भी द्योतक है। हमें पीने के लिए गो–रस और हृदय में बसाने के लिए उक्त माधुर्य आदि गुण प्राप्त हों। हम शरीरों से भी पुष्ट हों। हृदय में बसाने के लिए उक्त माधुर्य आदि गुण प्राप्त हों। हम शरीरों से भी पुष्ट हों। हमारे अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय रूपवाले पंच शरीरों का समुचित विकास हो। हमारा मन भी शिव हो, क्योंकि जब तक मन अशिवसंकल्पों से युक्त रहेगा, तब तक हमें किसी भी क्षेत्र में उत्कर्ष प्राप्त होना सम्भव नहीं है। मन को साधकर ही मनुष्य उन्नति की ओर अग्रसर होता है, और मन की जीत पर ही उसकी जीत निर्भर है, मन के हारने पर उसका हारना अवश्यम्भावी है।

**'त्वष्टा'** परमेश्वर सारे जगत् का तरखान है, शिल्पी है, जिसका हस्त–कौशल सम्पूर्ण विश्व में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। वह **'सुदत्र'** है, निरंतर सबको शुभ वस्तुओं का दान करता रहता है। वह हमें भी शुभ ऐश्वर्यों का–धन, चक्रवर्ती राज्य, सुख, आरोग्य आदि का दान करे। वह हमें भौतिक एवं आध्यात्मिक समस्त शुभ सम्पत्तियों का अधीश्वर बनादे। हमारे शरीर का कोई अंग यदि सदोष या त्रुटिपूर्ण हो गया है, तो वह कुशल शिल्पी उसे परिमार्जित, सुसंस्कृत एवं परिशुद्ध कर दे। यदि हमारे नेत्रों की दृष्टि–शक्ति मन्द हो गई है अथवा दृष्टि–शक्ति मन्द हो गई है अथवा दृष्टि–शक्ति तीव्र होते हुए भी हम उसका उपयोग अभय दृश्यों को देखने में करते हैं, तो त्वष्टा प्रभु हमारी मन्द या अपवित्र नेत्र–शक्ति को शुद्ध कर दें। इसी प्रकार श्रोत्र, मुख, नासिका आदि अन्य अंगों को भी मांजकर तीव्र–शक्तिमय एवं पवित्र कर दे। हे कलाकार त्वष्टा प्रभु! तुम हमारी तूलिका से रंग भरकर हमें सर्वांग–सुन्दर, सर्व–गुण–सम्पन्न और सर्व–शक्ति–समन्वित कर दो।

❑

**वेद मंजरी से**

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

# मानव जीवन गाथा

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि जीवन की सितार बजानेवालो, शरीर की रक्षा करो अवश्य, इसे खिलाओ–पिलाओ, इसे स्वस्थ रखो, परन्तु इस आत्मा को भी कुछ खिलाओ, जो वास्तविक गानेवाला है। इसके बिना यह सितार व्यर्थ है। इसके बिना देखती नहीं, हाथ हिलता नहीं, जिह्वा बोलती नहीं, नाक सूंघती नहीं। कुछ भी नहीं होता।

हम जो कुछ देखते हैं किसकी ज्योति से देखते हैं। महर्षि ने बताया कि सूर्य की ज्योति के कारण देखते हैं। सूर्य अस्त होने पर चन्द्रमा के प्रकाश से। चन्द्रमा भी न हो, नक्षत्र भी न हो, नक्षत्र भी न हों तो शब्दों की ज्योति से देखते हैं। यदि शब्द भी न हो तो हम आत्मा की ज्योति कसे देखते हैं। आत्मा की ज्योति से ही सारे कार्य होते हैं।

––अब आगे

सो भाई मेरे! वास्तविक ज्याति आत्मा की है। द्रष्टा, श्रोता, प्रत्येक कार्य का कर्त्ता, इस सितार को बजानेवाला, इस गीत को जाननेवाला आत्मा है।

और यह आत्मा क्या है? राजा जनक ने पूछा–

**कतम आत्मेति!**

ऋषि ने उत्तर दिया–

**योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः।**

**बृहदारण्यक 4।3।7।।**

यह जो विज्ञान से भरा हुआ, इन्द्रियों से ढका हुआ, हृदय के अन्दर ज्योतिवाला विराजमान है, यह आत्मा है। कुछ लोग कहते हैं कि यदि आत्मा है तो वह दृष्टिगोचर क्यों नहीं होता?

इसका सीधा–सादा उत्तर यह है कि इन्द्रियों के आवरण ने उसे ढक रखा है। दस इन्द्रियाँ, ग्यारहवाँ मन, उनके पर्दे को हटा दीजिये, तो आत्मा साक्षात् दिखाई देता है।

मैं जब कैलास–यात्रा को जा रहा था, तो मानसरोवर पहुँचा–पन्द्रह सहस्त्र फीट ऊँचे स्थान पर फैली हुई उस नीली झील के किनारे। वहाँ से तीन मील दूर कैलास है–बाईस हजार फीट ऊँचा। वहाँ हमें पहुँचना था। मार्ग में रेत का एक विशाल मैदान था। हर ओर रेत ही रेत, चट्टानें ही चट्टानें, क्योंकि वृक्ष वहाँ होते ही नहीं। दो मील चलने के पश्चात् एक नदी आई। बहुत चौड़ी नहीं थी, परन्तु तेज बहुत थी और बर्फ के छोटे–छोटे टुकड़े उसमें भागे जा रहे थे। हमारा पथप्रदर्शक था कीचखम्बा। मैंने उससे कहा, "कीचखम्बा! बर्फ के ये टुकड़े तो पैरों को काट देंगे।" वह बोला, "फिर भी जाना तो होगा। पानी बहुत गहरा नहीं, चलिये।" बड़ी कठिनता से हमने नदी को पार किया। पाँवों में कई स्थानों से रक्त बहने लगा। परन्तु क्या करते! रक्त को धोया, फिर चल पड़े। अभी एक ही मील चले थे कि एक और नदी आ गई। मैंने कहा, "कीचखम्बा, यह तो और नदी आ गई?" वह बोला, "अभी देखते चलो, अभी कई नदियाँ आयेंगी।" मैंने पूछा, "कितनी?" वह बोला, "मैं नहीं बताता, तुम घबरा जाओगे।" हमने ज्यूँ–त्यूँ करके इस नदी को भी पार किया। आधे मील के पश्चात् एक और नदी आ गई। ज्यूँ–ज्यूँ दिन बढ़ता जाता था, त्यूँ–त्यूँ नदियों में पानी बढ़ता जाता था।

तिब्बत में वर्षा होती नहीं। धूप से बर्फ पिघलती है। इससे नदियों में पानी आता है। ज्यूँ–ज्यूँ धूप तीव्र हो रही थी, त्यूँ–त्यूँ नदियों में पानी अधिक हुआ जाता था। शाम के समय हम जिस नदी के पास पहुँचे, उसमें कमर से ऊपर तक पानी था। दिनभर की यात्रा, दस नदियाँ पार करने की थकान, उस पर वह भयानक और गहरी नदी! मैंने कीचखम्बा को कहा, "कीचखम्बा! यह नदी तो पार न हो सकेगी।" उसने कहा, "तो फिर पड़े रहो यहीं। इसको पार किये बिना तो कैलास के दर्शन हो नहीं सकते।" मैंने कहा, "ऐसा कैसे होगा? तू उठाकर ले चल।" वह बोला, "तुम्हें तो उठाकर ले चलूँ, परन्तु तुम्हारे साथ तो और कितने ही व्यक्ति हैं। सबको यदि इस प्रकार उठाकर ले गया तो पुनः–पुनः नदी के इस पार और उस पार आते–जाते मैं तो यहीं मर जाऊँगा।" मैंने कहा, "अच्छा थोड़ा सहारा ही दे दे।" उसने सहारा दिया। बहुत कठिनता से मैं नदी के पार पहुँचा। बर्फ के पानी ने शरीर को सुन्न कर दिया। कहाँ–कहाँ बर्फ के टुकड़े लगे, कहाँ–कहाँ से रक्त बहा, इसका पता ही नहीं लगा। दूसरे तट पर जाते ही ऐसा लगा कि जैसे चेतनारहित हुआ जाता हूँ। जी में आता कि यहीं रेत में सो जाऊँ। परन्तु कीचखम्बा ने कहा, "बैठो या सोओ नहीं, शीघ्रता से दौड़ो, नहीं तो फिर कभी उठ न सकोगे।" तब क्या करता! दौड़ा, एक मील तक भागता चला गया। शरीर में

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org



# यज्ञ एवं मनुष्य

● डॉ. रोचना भारती

आज सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण प्रदूषण रूपी महाभयंकर भस्मासुर हवा, पानी ही नहीं पृथ्वी, आकाश, ध्वनि आदि समस्त महत्वपूर्ण संसाधनों को भस्म कर रहा है, दूषित कर रहा है। इस दूषित पर्यावरण में उत्पन्न भौतिक पदार्थों से अन्न–वनस्पतियाँ आदि खाद्य पदार्थ भी दूषित हो गए हैं। इन दूषित खाद्य पदार्थों के उपयोग से मनुष्य के शरीर में बनने वाले रक्त–मांसादि धातुएं भी अशुद्ध, निर्बल और निकृष्ट बन चुकी हैं। इन सभी रसों धातुओं के आधार से बने शरीर में काम करने वाले मन, बुद्धि भी दोषयुक्त और विकृत बन गए हैं। परिणामतः मनुष्यों के विचार, वाणी तथा व्यवहार इतने निकृष्ट और संस्कारहीन हो चुके हैं कि उनमें व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के प्रति स्वार्थ, ईर्ष्या–द्वेष, अन्याय, छल–कपट, क्रूरता और उच्छृंखलता आदि बढ़ते जा रहे हैं। परस्पर प्रेम, विश्वास, दया, सेवा, निष्कामता आदि की भावना समाप्त प्रायः हो गई है। इन बुराइयों को दूर करने का अमोघ अस्त्र है प्रतिदिन एक हवन–यज्ञ करना, जिससे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकारों की शुद्धि करने के साथ आत्मिक उन्नति भी अवश्यमेव होगी।

छान्दोग्य उपनिषद में कहा है–

**पुरुषो वाव यज्ञः।** –3.16

(मनुष्य का जीवन ही यज्ञ है।)

जैमिनीय ब्राह्मण में कहा है–

**द्विर्ह वै यजमानो जायते मिथुनादन्यज्जायते यज्ञादन्यत्।** – 1.259

(यजमान दो बार जन्म लेता है, एक बार माता–पिता से और दूसरा यज्ञ से।)

**अजातो ह वै तावत् पुरुषो यावन्न यजते। – जै.उ. ब्राह्मण – 3.3.4.8**

(तब तक पुरुष अजन्मे की तरह होते हैं उनका सांस्कृतिक जन्म नहीं होता, जब तक यज्ञ नहीं करता।)

प्राचीन ऋषियों ने मानव–जीवन को सौ वर्ष की आयु के अनुसार 25 वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम के, जिसमें व्यक्ति के विद्यार्जन तथा जीवन निर्माण के लिये, 25 से 50 वर्ष गृहस्थाश्रम के लिये, जिसमें धनोपार्जन, परिवार का पालन तथा वंश वृद्धि करना, 50 से 75 वर्ष वानप्रस्थ आश्रम में, 50 वर्षों में अर्जित अनुभवों एवं ज्ञान को परोपकार में लगाना तथा साधना, तपस्या, चिन्तन, स्वाध्याय, प्रभु–भक्ति आदि द्वारा गृहस्थाश्रम में क्षीण हुई शक्तियों को पुनः प्राप्त करके अंतिम 25 वर्ष सन्यास आश्रम में पूरा समय लोकोपकार में लगाने का विधान बनाया था। चारों आश्रमों में सामाजिक दृष्टि से **"गृहस्थाश्रम"** को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि गृहस्थ–परिवार ही तीनों आश्रमों का आधार होते हैं, वही आर्थिक रूप से इन तीनों के सहायक होते हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और सामाजिक पर्यावरण का अच्छा या बुरा प्रभाव उस पर पड़ता ही है, अतः शुद्ध, पवित्र नैतिकता के लिये मनुष्य के विचारों का शुभ होना आवश्यक है। निम्न मन्त्र में चारों ओर से शुभ विचार मिलें, यह कामना की गई है–

**आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरितास उद्भिदः।**
**देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायवो रक्षितारो दिवे दिवे।।**

–यजु. सं. 25.14

(अर्थात् कल्याणकारी, विघ्नरहित, अप्रतिहत, शुभफलप्रद विचार हमें सभी ओर से प्राप्त हों जिससे आलस्यरहित और रक्षा करने वाले देवता प्रतिदिन सदा ही हमारी समृद्धि के लिये हों।)

मनुष्य विचारों का पुंज है, शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि–

**काममय एवायं पुरुष इति स यथाक्रामो भवति तथाक्रतुः।**
**भवति, यथाक्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते, यत्कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यऽइति।**

(अर्थात् मनुष्य कामना वाला होता है, मन में जैसी इच्छा करता है, वैसा ही आचरण करता है, वैसा ही कर्म करता है। जैसा कर्म करता है, वैसी ही गति को प्राप्त करता है।)

मनुष्य सृष्टि का उपभोक्ता है। उस उपभोग का आनन्द मन के द्वारा अनुभव करता है। मनुष्य के जीवन में मन का महत्त्वपूर्ण स्थान है, मन जड़ होते हुए भी सूक्ष्म एवं अति वेगवान है। इसे वश में करना दुरूह साध्य तो है किन्तु आवश्यक अवश्य है। मनुष्य का कोई भी कार्य मन के बिना असंभव है, मन ही कार्य के प्रति संकल्प–विकल्प करता है, मन ही उसकी पूर्णता के लिये निश्चय करता है, मन ही उन विभिन्न कार्यों से उपलब्ध वस्तुओं के भोग में लगाकर नाना स्वाद ढूढता है और मन ही भोग में लग कर आत्मिक आनन्द खोजता है। तात्पर्य स्पष्ट है कि दुनिया के जितने भी व्यवहार हैं, मन पर केन्द्रित हैं, जिसके लिये यजुर्वेद के 34वें अध्याय के प्रारंभिक छः मन्त्रों में – **"तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु"**– अर्थात् मेरा मन शुभ कल्याणकारी संकल्प वाला होवे, इस आवृत्ति पूर्वक परमात्मा से मन के शुभ होने की बहुधा प्रार्थना की है।

**येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञेकृण्वन्ति विदथेषु धीराः।**
**यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। – यजु. 34.1.2**

(अर्थात्–हे प्रभो! जिस मन की सहायता से मनस्वी धीर पुरुष विशेष ज्ञान पूर्वक किये जाने वाले यज्ञों में कर्त्तव्य–करने योग्य कर्मों को करते हैं, जो शरीरों के भीतर अपूर्व पूजनीय रूप में विद्यमान है, वह मेरा मन आप की कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।)

**यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।**
**यस्मान्न ऋते किञ्चनकर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। – यजु. 34.1.3**

(अर्थात् – मेरा जो मन ज्ञान का साधन और चेतना का आधार है, जो शरीरों में छिपा हुआ है, मरण धर्म रहित ज्ञान का प्रकाशक है, जिसकी सहायता के बिना कोई भी कर्म नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन आप की कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।)

**यस्मिन्नृचः समा यजु २ षि यस्मिन प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।**
**यस्मिंश्चित्त २ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। – यजु. 34.1.5**

(अर्थात्–हे प्रभो! जिस मन में रथ नाभि में अरों के समान ऋग्, यजु, साम और अथर्व वेदों का सब प्रकार का ज्ञान–विज्ञान ठहरा हुआ है, जिसमें प्राणियों की चिन्तन–शक्ति वस्त्र में सूत के समान ओत–प्रोत है, वह मेरा मन आप की कृपा से शुभ संकल्प वाला होवे।)

**तेषां मध्यान्मनुष्या एवोपकारानुपकारौ–**
**सर्वोपकारायसर्वैर्मनुष्यैर्यज्ञः कर्त्तव्य एव।**

(भाषार्थ–जितने प्राणी देहधारी जगत् में हैं उनमें से मनुष्य ही उत्तम है। इससे वे ही उपकार और अनुपकार को जानने योग्य हैं। **"मनन"** नाम विचार का है, जिसके होने से मनुष्य नाम होता है, अन्यथा नहीं, क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य के शरीर में परमाणु आदि के संयोग विशेष से विज्ञानोत्पत्ति के अनुकूल अवयव इस प्रकार रचे हैं कि जिनसे उनको ज्ञान की उत्पत्ति होती है। इसी कारण से धर्म का अनुष्ठान और अधर्म का त्याग करने के योग्य होते हैं, अन्य नहीं। इससे सबके उपकार के लिये यज्ञ का अनुष्ठान भी उन्हीं को करना उचित है।)

अन्य देहधारी प्राणी भी प्रदूषण को उत्पन्न करते हैं, किन्तु मनुष्य के बुद्धिजीवी होने से शास्त्र ने धर्माधर्म का विधान उसी के लिये किया है। मनुष्य कहते ही उसे हैं जो मननशील हो अर्थात् सोच–विचार कर अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्य (किं कर्म किमकर्मेति) का निश्चय करता हो–

**मत्वा सीव्यन्ति कर्माणि, मनस्यमानेन सृष्टाः। – निरुक्त. 3.7**

यह सामर्थ्य अन्य किसी प्राणी में नहीं है। ग्रन्थकार ने मनुष्य मात्र के लिये यज्ञ करना अनिवार्य ठहराया है। जैसे वेद ने सत्यभाषणादि का उपदेश दिया है, वैसे ही मनुष्यों को यज्ञ करने का आदेश दिया है–

**यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। – यजु. 31.16**

जैसा पाप निषिद्ध कर्मों को करने में है, वैसा ही विहित कर्मों के न करने में है। अतः यज्ञ करने में मनुष्य मात्र को प्रवृत्त होना चाहिये। यज्ञ न करने वालों के लिये निन्दा–परक वचन भी वेद में मिलते हैं।

मनुष्य के मन का उत्तम होना जहाँ अन्यों के व्यवहार के लिये आवश्यक है, वहीं स्वतः के लिये भी आवश्यक है। मनुष्य का मन यदि विचलित हो जाए तो दूषित भावनाएं उसकी इन्द्रियों को इतना मलिन बना देती हैं कि उस व्यक्ति के आस–पड़ोस, समाज–परिवार उसके रहने से कष्ट अनुभव करते हैं और स्वयं वह व्यक्ति ग्लानि और उदासीनता से भर जाता है। परिणाम यह निकलता है कि पर्यावरण मलिन हो जाता है, मलिनता की ही जैसे खेती होती है, भरमार हो जाती है। मनुष्य की इस मलिनता को दूर करने के लिये वेदों में यज्ञ को ही यज्ञोपचार बताया है, मन्त्र है–

**मनोयज्ञेन कल्पताम्। – यजु. 18.29**

(अर्थात् मन की शुद्धता, मन की पवित्रता यज्ञ से प्राप्त करें।)

यज्ञ में मन्त्रोच्चार का विनियोग वेद ने किया है–

**समिधा या आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्नये**
**यो नमसा सध्वरः। – ऋ. 8.19.5**

(अर्थात् जिस यज्ञ में मन्त्रोच्चार होता है तथा मन्त्र पूर्वक आहुति और समिधा का त्याग होता है, वह अहिंसक यज्ञ होता है।) जहाँ हिंसा न हो वह यज्ञ है, मन का दोष, मन का दूषण हिंसा है। यज्ञ को करने से व्यक्ति सुमन बनता है अहिंसक बन जाता है। मनुष्य के लिये यज्ञ कितना आवश्यक है इसके लिये वेदों में अनेक वचन हैं।

ऋग्वेद में कहा है –

**यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनोऽभूत्। – ऋ. 3.32**

(हे इन्द्र = जीव, यजमान! यज्ञ ही तुझे बढ़ाने वाला है।)

**यजध्वं हविषा तना गिरा। – ऋ. 2.2**

(वाणी, आहुतियों एवं शरीर से यज्ञ में प्रवृत्त हो।)

**यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्रिरे। – ऋ. 2.21.5**

(कर्म परायण लोग यज्ञ से सन्मार्ग की दिशा पाते हैं।)

**ईजानः स्वर्ग यन्ति लोकं। – अथर्व. 14.4.2**

(यज्ञ करने वाला उत्तम सुख को प्राप्त होता है।)

वेद में यह भी बताया है कि जो यज्ञ नहीं करता उसका परिणाम क्या होता है? अयज्ञीय परिणाम व्यक्त करने वाला मन्त्र है –

**अयज्ञीयों हत वर्चा भवति। – अथर्व. 12.2.37**

(यज्ञ न करने वाले का तेज नष्ट हो जाता है।)

वह व्यक्ति तेजोहीन होकर मलिन पर्यावरण को तैयार करता है, वह स्वतः नहीं करता अपितु उसकी आत्मा, उसका मन उसकी अन्य इन्द्रियां सभी कुमार्ग कुवृत्ति में प्रवृत्त हो जाती हैं, फलतः अपने पर्यावरण को संभालने में व्यक्ति असमर्थ रहता है। उस असमर्थता को यज्ञ ही दूर करता है, अतः कहा है–

**शुद्धाः पूताः भवत यज्ञियासः। – ऋ.10. 18.2**

(अर्थात् यदि मनुष्य अपनी बुराइयों अपनी मलिनता तथा मृत्यु आदि के भय से बचना चाहता है, दीर्घायु होने की लालसा है तो पवित्र जीवन एवं सुन्दर जीवन के लिये नित्य यज्ञ करना चाहिये।)

**7, एमः आई. डी. सी.**
**नेताजी सुभाष चन्द्र मार्ग**
**सप्तपुर, नासिक– 422007**

www.thearyasamaj.org



कुछ उपनिषदों से

# सृष्टि का धारण एवं प्रकाशन किस शक्ति से है? (प्रश्नोपनिषद्)

कई बार विचार आता है कि सृष्टि का धारण एवं प्रकाशन किस शक्ति से है? इसके उत्तर में प्रश्नोपनिषद् में एक कथा है कि ब्रह्माण्ड के जड़ जगत के विषय में आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी सभी कह रहे थे कि हमने ही सृष्टि को धारण किया हुआ है। इसी प्रकार पिण्ड के चेतन जगत में वाणी, मन, चक्षु तथा श्रोत्र आदि कह उठे कि हम ही हैं इस पिण्ड को धारण करने वाले। प्रत्युत्तर में प्राण ने कहा कि मैं अपने को पाँच भागों में विभक्त करके जैसे एक छप्पर को एक बल्ली धारण कर रही होती है वैसे ही मैं इसे धारण कर रहा हूँ। परन्तु सभी ने इस पर असहमति जताई। प्राण भी अपना अभिमान न रोक सका और उत्क्रमण करके निकलने ही लगा कि दूसरे सभी निकलते नजर आने लगे और प्राण के ठहरने से ही सब ठहरने लगे।

प्राण ही अग्नि रूप में ताप दे रहा है, वही सूर्य रूप में प्रकाश दे रहा है। वही बादल में जल बरसा रहा है। प्राण ही वायु रूप में जीवन दे रहा है। अतः संसार में जो मरणधर्मा सत्–असत् है, जो अमरण धर्मा अमृत है– सब प्राण ही है। संसार को थामने वाली भौतिक शक्ति क्षत्र है, आत्मिक शक्ति ब्रह्म है–ये दोनों भी प्राण शक्ति पर ही आश्रित हैं।

पिप्लाद ऋषि से फिर प्रश्न किया गया कि यह प्राण जो सब उत्पन्न पदार्थों को धारण करता है वह–

1 स्वयं कहाँ से उत्पन्न होता है?

2 शरीर में किस प्रकार प्रवेश करता है?

3 अपने भिन्न–भिन्न विभाग करके शरीर में किस प्रकार स्थित है?

4 प्राण शरीर में से किस प्रकार निकलता है?

5 बाह्य संसार को किस प्रकार धारण करता है?

6 आत्मा को किस प्रकार धारण करता है?

ऋषि ने उत्तर दिया और प्रश्नकर्ता की जिज्ञासा को शांत किया।

1 प्राण की उत्पति आत्मा से होती है। जब जीवात्मा गर्भ में आता है तब उसके साथ प्राण भी आ जाता है। जिस प्रकार पुरुष के साथ छाया लगी है इसी प्रकार आत्मा के साथ प्राण लगा है। जीवात्मा अकेले गर्भ में नहीं आता। प्राण भी उसके साथ ही प्रवेश करता है।

2 मन के किए से वह प्राण शरीर में आता है। मन की वासनाएँ ही रस्सी बनकर आत्मा को शरीर मे खींच लेती हैं। आत्मा शरीर में आया नहीं कि प्राण चलने लगे। मनुष्य ने पूर्वजन्मों में जो शुभ–अशुभ कर्म किए थे जिनका फल उसको पूर्व जन्मों में नहीं मिला था उनका संस्कार मन में रहता है। उन कर्मो का फल भुगतने हेतु मन सहचरित जीवात्मा के साथ प्राण भी शिशु देह में प्रवेश करता है।

3 जिस प्रकार सम्राट् अपने कर्मचारियों को भिन्न–भिन्न विभाग नियुक्त करता है उसी प्रकार प्राण भी अन्य प्राणों को पृथक–पृथक कार्यों के लिए नियुक्त करता है।

चक्षु, श्रोत्र–मुख, नासिका में स्वयं **प्राण,** गुदा तथा उपस्थ भाग में **अपान,** शरीर के मध्य भाग में **समान**। समान के द्वारा ही शरीर में पड़ा हुआ अन्न सम करके अर्थात एक रस बनाकर सब जगह पहुँचता है। जिससे शरीर में सात ज्योतियाँ प्रकाशित हो उठती हैं। दो आंखें, दो नाक, दो कान और एक मुख। इन्हें समान के द्वारा ही रस की प्राप्ति होती है।

आत्मा का निवास हृदय में है। हृदय के साथ मुख्य रूप में 101 नाड़ियाँ हैं। इनमें से एक–एक से सौ–सौ शाखाएं निकलती हैं। उन शाखाओं से भी 72000 प्रतिशाखाएं निकलती हैं। इस प्रकार हृदय से लेकर पूरा रक्त संचारिणी संस्थान में **व्यान** विचरता है। हृदय से एक नाड़ी मस्तिष्क को जाती है। उसमें **उदान** ऊपर या नीचे की तरफ जीवन रहता है। यह तो हुआ पिण्ड में प्राणपान आदि का वर्णन। ब्रह्माण्ड में स्थिति इस प्रकार वर्णित है।

बाह्य जगत में प्राण ही आदित्य रूप होकर उदय होता है। आदित्य की प्राण शक्ति ही चक्षु की प्राण शक्ति को अनुग्रहीत करती है। अतः चक्षु इस पिण्ड का सूर्य है। सूर्य इस ब्रह्माण्ड का चक्षु है। प्राण ऊपर है, अपान नीचे। सूर्य के साथ प्राण का तथा पृथ्वी के साथ अपान का सम्बन्ध है।

पृथ्वी का देवता कौन है जो इसे नीचे की ओर खींचता है? वही तो इसका देवता है, उसी से पृथ्वी टिकी हुई है वर्ना तो सूर्य के खिंचाव से उसी से जा टकराती। अतः अपान ही गुरुत्व रूप हो कर स्थिति का कारण है। सूर्य और पृथ्वी के बीच जो अन्तर है, इन दोनों के बीच जो आकाश है वही समान है। वायु व्यान है। शरीर में जैसे उदान है वैसे ही ब्राह्म जगत में तेज।

4 जिस प्रकार उदान द्वारा आत्मा शरीर से निकलता है उसी प्रकार जब तक शरीर में तेज रहता है तब तक आत्मा उदान की सहायता से शरीर में ही रहता है। जब शरीर का तेज शान्त हो जाता है तब इन्द्रियाँ बाहर फिरना छोड़कर मन में जा टिकती हैं।

5 अतः शरीर का उदान बाह्य जगत के तेज का प्रतिनिधि है। जैसे बाह्य जगत में जब तेज अस्त होने लगता है तब इन्द्रियाँ मन में लीन हो जाती हैं और सूक्ष्म मन सहित जीवात्मा पुर्नजन्म को प्राप्त होता है। तब सारी सृष्टि मानो मर कर नए दिन की तैयारी करने लगती है। वैसे ही शरीर का तेज जब शांत होने लगता है तब उदान की सहायता से आत्मा पुण्य कर्मों के कारण पुण्य लोक में, पाप कर्मों के कारण पाप लोक में, उभय कर्मों के कारण मनुष्य लोक में जाता है।

6 मृत्यु के समय जिस प्रकार का चित्त होता है उसी प्रकार का चित्त प्राण के पास पहुंचता है। प्राण अपने तेज के साथ आत्मा के पास पहुंच जाता है। अतः प्राण ही तेज, चित्त और आत्मा के अपने संकल्पों के अनुसार के लोक में ले जाता है।

तेज, चित्त एवं आत्मा क्या है, इन तीनों का प्राण के साथ क्या सम्बन्ध है?

वास्तव में प्राण की दो शक्तियां हैं–1 शारीरिक 2 मानसिक।

प्राण की शारीरिक शक्ति उसका तेज है। प्राण के तेज से ही शरीर क्रिया करता है। इसी प्रकार प्राण की मानसिक शक्ति उसका चित्त है। इस चित्त के द्वारा ही संकल्प विकल्प होता है। मृत्यु के समय प्राण अपने तेज और चित्त को साथ लेकर चल पड़ता है। चलते समय आत्मा भी साथ हो लेती है क्योंकि आत्मा और प्राण ने तो साथ ही रहना है। आत्मा शरीर में से जिस मार्ग से निकलती है उसे उपनिषत्कार ने उदान मार्ग कहा है। यह वह मार्ग है जो हृदय की उस नाड़ी से चलता है जो मस्तिष्क में जाकर खुलती है। (Carotid Artery)

इस प्रकार ऋषि ने यह जिज्ञासा शांत की कि प्राण की उत्पत्ति कहाँ से होती है। भिन्न–भिन्न पांच स्थान कौन से हैं जहाँ यह अपने आप को विभाजित करता है। किस प्रकार संसार में प्राण सब जगह व्याप रहा है। यह शरीर एवं बाह्य जगत में अर्थात् पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड में किस प्रकार तादत्म्य स्थापित किए हुए है। अर्थात् प्राण ही जीवन का आधार है शरीर मात्र का ही नहीं अपितु ब्रह्माण्ड का भी। उसी ने ही सृष्टि को धारण किया हुआ है एवं प्रकाशन शक्ति भी उसी से ही है।

इसी प्रकार का वर्णन बृहदारण्यक उपनिषद् में है। वहाँ याज्ञवल्क्य कहते है कि शरीर एवं हृदय प्राण में प्रतिष्ठित हैं। प्राण अपान में, अपान व्यान में, व्यान उदान में है, उदान समान में प्रतिष्ठित है।

**गली मास्टर मूल चंद वर्मा**
**फाजिल्का 152123 (पंजाब) मो. 09217832632**

## स्वतंत्रता

वे मृत शरीर नवयुवकों के,
वे शहीद जो झूल गए फाँसी के फंदे से–
वे दिल जो छलनी हो गए भूरे सीसे से,
सर्द और निष्पंद जो वे लगते हैं, जीवित हैं और कहीं अबाधित ओज के साथ।
वे जीवित हैं अन्य युवाजन में, ओ राजाओ!
वे जीवित हैं अन्य बन्धु–जन में, फिर से तुम्हें चुनौती देने को तैयार।
वे पवित्र हो गए मृत्यु से–
शिक्षित और समुन्नत।

**भगत सिंह की जेल डायरी से**

www.thearyasamaj.org



# महर्षि का वेद–भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है

● खुशहाल चन्द्र आर्य

महर्षि देवदयानन्द का वेद–भाष्य, अन्य भाष्यकारो से कहीं अधिक सार्थक है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर ख़रा उतरता है। पहले के भाष्यकार वेदों में हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्मकाण्ड के ही ग्रन्थ मानते थे परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कहीं पर भी हिंसा नहीं है और न ही इनमें इतिहास है और वेद केवल कर्मकाण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानव–मात्र का बड़ा उपकार किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो यह लेख लिखा है, इसे पढ़कर मैं आशा करता हूँ कि सुधी पाठक गण वेदों के सही स्वरूप को समझ पायेंगे। यही मेरी उपलब्धि होगी।

लेख इसी भाँति है:–

**मध्यकालीन वेद भाष्यकार :–** मध्यकाल में अनेक वेद भाष्यकार हुए हैं जिन्होंने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाष्य किया है। विक्रम संवत् 687 में स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के 4–5 सूक्तों का आधियाज्ञिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड परक) वेद भाष्य किया। स्कन्द स्वामी के समय ही "उद्गीथ" हुए हैं, उन्होंने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पांचवें सूक्त के चौथे मन्त्र से 86 सूक्त के 6 मन्त्र तक वेद भाष्य किया। ये भाष्य भी कर्मकाण्ड परक ही हैं। विक्रम संवत् की 12वीं शताब्दी में वेंकटमाधव ने ऋग्वेद का आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत् की 13वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद के पहले मण्डल के 164 सूक्त) का अध्यात्मिक प्रक्रियानुसार भाष्य किया। 'आनन्द तीर्थ' ने (विक्रम संवत् 1255–1335) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणाचार्य (विक्रम संवत् 1372–1442) के सम्पूर्ण ऋग्वेद का (बाल विल्य सूक्तों को छोड़कर) आधियाज्ञिक प्रक्रिया परक भाष्य किया। कहीं–कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी किये हैं।

उव्वट (विक्रम संवत् 1100) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्मकाण्ड परक भाष्य है। महीधर (विक्रम सवत् 1645) ने भी यजुर्वेद का भाष्य याज्ञिक प्रक्रियानुसार किया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मन्त्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा। गोमेध, अवश्मेधादि शब्दादि का अनर्थ करके पशुहिंसा जैसे जघन्य कृत्य को यजुर्वेद मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित किया। यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का भाष्य भट्ट भास्कर ने वि.सं. 1100 में किया तथा इसी शाखा का सायण ने भी भष्य किया।

सामवेद का भाष्य भरत स्वामी ने विक्रम संवत् 1360 के लगभग किया, कर्मकाण्ड परक अर्थों के साथ–साथ कहीं–कहीं अध्यात्म परक अर्थ भी किये। माधव जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुए, उन्होंने भी सामवेद का भाष्य किया। आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अतिरिक्त कुछ मन्त्रों का अध्यात्मिक अर्थ भी किया। अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाण भी उद्धृत किये। भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया।

अथर्ववेद का मध्य कालीन आचार्यों में केवल सायण ने ही भाष्य किया। इसमें भी उन्होंने मन्त्र–तन्त्र, जादू–टोना कृत्य, अभिचार (हिंसा) आदि कृत्यों का वर्णन भाष्य करते हुए किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्मकाण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशु हिंसा, मांस भक्षण, जादू–टोना, मारण–उचारण, अग्नि–इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख ऐश्वर्यों का भोगना, यज्ञ की हवि (आहुति) का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृश्य रूप में यज्ञ स्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के पश्चात् यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचारधारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया। जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल कुछ व्यक्ति विशेष (ब्राह्मणों) के लिए ही हैं जो याज्ञिक कर्मकाण्ड कराते हैं। इस प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिये ही उपयोगी हैं–यह प्रसिद्ध कर दिया गया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद से रुचि हट गयी। वेद कथा, वेद प्रवचन, वेद प्रचारादि के स्थान पर भागवत–गीता, उपनिषद् और सत्यनारायण आदि की कथा तथा प्रवचनादि प्रचलित हो गये।

**पाश्चात्य विद्वान् :–** आधुनिक युग (18वीं 19वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् 1850 में डॉ. एच. एच. विल्सन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा वेद की संहिताओं के तथा सायण भाष्य के सम्पादक का भी परिश्रमसाध्य कार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान् ग्रासमान ने सन् 1876–1877 में किया। इसी प्रकार जर्मन विद्वान् ए. लुडविग. एच. ओल्डनवर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर. टी. एच. ग्रेफिश ने (सन् 1881–1898) चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया। लांगल्वा नामक फ्रांसीसी विद्वान् ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ. कीथ ने तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी अनुवाद किया। थियोडोर बेन्फे ने (सन् 1848 में) सामवेद तथा अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) का ब्लूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् 1901 में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेशों में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों से बहुत कार्य हुआ।

**महर्षि दयानन्द :–** महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में, वेदों का प्रचार–प्रसार करना, ईश्वर, धर्म और वेदों के नाम पर प्रचलित पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डन, शंका समाधान करना, शास्त्रार्थ करना, स्वार्थी लोगों द्वारा उपस्थित विघ्न–बाधाओं का सहन करना, दिन–रात प्रचार यात्रा करना, छोटे बड़े 43 ग्रन्थों को लिखना, अपने आप में एक अद्भुत कार्य उन्होंने किया। स्वार्थी और मूर्ख व्यक्तियों ने उन पर ईंट–पत्थर फेंके, खाने में विष मिलाया, कुटिया में आग लगायी, ध्यान में बैठे हुए को नदी में फेंका आदि दुष्कृत किये किन्तु गुरु भक्त एवं प्रभु विश्वासी देव देयानन्द अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए ओर गुरु को दिया हुआ वचन उन्होंने आजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उव्वट और महीधर ने गो मेध, अश्व मेध, नरमेधादि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठे अध्याय के 7 से 22वें मन्त्र तक पशु को बांधने, देवता के लिए उसका वध करने, आहुति देने का भयानक चित्रण किया है, साथ ही यह भी प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिए की गयी हिंसा , हिसा नहीं होती। ऐसा कुकृत्य वेदों के साथ किया गया, जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख हो गये। महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रमाण देकर यज्ञों में हिंसा का घोर विरोध किया। उन्होंने यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में "पुश न पाहि" पशुओं की रक्षा करने का उपेदश दिया। गौ को "अघ्न्या" अर्थात् हिंसा के अयोग्य बताया और गो मेध का अर्थ गाय की हिंसा नहीं अपितु इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना है। अश्वमेध का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शव का अन्त्येष्टि संस्कार नरमेध बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्भुत कार्य महर्षि ने अपने वेद भाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर वेदों के महत्व को बढ़ाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा।

इस लेख को पढ़कर सुधी पाठक गण यह समझ गये होंगे कि मध्यकालीन वेद भाष्य कर्त्ताओं ने वेदों के अर्थ का अनर्थ करके वेदों में हिंसा तथा अनर्गल बातें बताकर वेदों को कितना बदनाम किया है, जिससे आम व्यक्ति वेदों में विश्वास व श्रद्धा न रखकर उनसे विमुख हो गये थे। देव दयानन्द ने वेदों के मन्त्रों का सही अर्थ लगाकर वेदों के प्रति लोगों में श्रद्धा उत्पन्न करके मानव मात्र का बड़ा हित व कल्याण किया है। ऐसे देव दयानन्द को "खुशहाल" नमन होकर श्रद्धा–सुमन अर्पित करता है।

180 महात्मा गान्धी रोड़
(दो तल्ला) कोलकता–700007
मो. 9830135794
फोन 22183825

www.thearyasamaj.org



# 1957 का हिन्दी रक्षा आन्दोलन : प्रत्यक्षदर्शी वर्णन

• डॉ. महावीर

"सूरज सुजान" फरवरी 2016 के अंक में डॉ. धर्मेन्द्र विद्यालंकार का उपरिलिखित विषय पर लेख पढ़ा। लेख अत्यन्त संक्षिप्त और सीमित होते हुए भी विषय की अच्छी जानकारी देता है। कुछ तथ्यों में थोड़ा अन्तर है। उदाहरण के लिए आन्दोलन में जत्थे और सत्यग्राही भेजने का "निर्देशन" ब्र. बलदेव "नैष्ठिक" कर रहे थे" ऐसा नहीं है। बलदेव 'सिंह' जो बाद में आचार्य बलदेव कहलाये उस समय झज्जर में सरकार के विद्युत विभाग में नौकरी करते थे, न तो वे गुरुकुल झज्जर में पढ़े थे और न ही उस समय वहां के स्नातक थे, वे रोहतक कालिज में एफ.एस.सी. तक पढ़े थे। वे आचार्य भगवान देव (स्वामी ओमानन्द जी) के कट्टर भक्त अवश्य थे, इसीलिये उन्होंने उन दिनों अपना आवास गुरुकुल झज्जर में बना लिया था। प्रतिदिन सायंकाल ड्यूटी पूरी होते ही वे गुरुकुल झज्जर आ जाते थे, अखाड़े में व्यायाम भी मेरे साथ (लेखक के साथ) ही करते थे और अपनी दिनचर्या भी गुरुकुल वाली ही रखते थे। वे उस समय ऐसी परिस्थिति में नहीं थे कि नौकरी छोड़कर आन्दोलन में भाग लें, वह भी सक्रिय भाग। खैर सर्वस्व त्याग बलदेव जी (आचार्य) ने बाद में किया।

मैं (लेखक) आन्दोलन का प्रत्यक्षदर्शी ही नहीं, अपितु सक्रिय भागीदार रहा हूँ। मेरी उम्र उस समय 22–23 वर्ष की थी। गुरुकुल झज्जर का उच्चतम अध्ययन पूरा कर चुका था। इसलिये आचार्य जी (भगवान देव जी) ने मुझे गुरुकुल में ही अध्यापन और संरक्षण (ब्रह्मचारियों का) का काम सौंप दिया। अपने संबंध में लिखने और बतलाने में हमेशा संकोच करता हूँ, आवश्यक समझ कर लिख रहा हूँ। गुरुकुल झज्जर में मीमांसा दर्शन और ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन की व्यवस्था न होने के कारण इन दोनों शास्त्रों का अध्ययन मैंने बाद में 1960–1962 में बनारस में किया।

हरियाणा में हिन्दी रक्षा आन्दोलन के उस समय प्रमुख रूप से तीन ही सूत्रधार थे, आचार्य भगवान देव, जगदेव सिंह सिद्धान्ती और प्रो. शेर सिंह। वैसे यह आन्दोलन पूरा देशव्यापी बन गया था और आर्य समाज तक ही सीमित न रहकर सनातन धर्मी लोग भी खूब बढ़–चढ़कर इसमें हिस्सा ले रहे थे, पंजाब (हरियाणा, पंजाब से अलग नहीं था) और दिल्ली के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र यहां तक कि दक्षिण भारत के प्रान्तों विशेषतः हैदराबाद और केरल तक से ट्रेनें भर–भरकर आन्दोलनकारियों के जत्थे पर जत्थे आ रहे थे।

1957 के प्रथम दो–तीन महीनों में आन्दोलन की रूपरेखा पूरे योजनाबद्ध तरीके से तैयार हो चुकी थी। जनता को इसके लिए तैयार करने के लिए अनेक स्थानों पर महासम्मेलनों का आयोजन किया गया जिसमें आर्यसमाज के प्रमुख वक्ता पंडित प्रकाशवीर जी शास्त्री, रघुवीर सिंह शास्त्री, जगदेव सिंह सिद्धांती आदि होते थे तथा प्रो. बलराज मधोक (जनसंघ) एवं सनातन धर्म के नेता–विद्वान् होते थे। आचार्य भगवान देव जी ने पूरी तरह अपने आप को आन्दोलन में झोंक दिया था। दिन–रात अपनी जीप गाड़ी में गांव–गांव घूम–घूम कर जन–धन जुटाकर आन्दोलन को सुदृढ़ और सफल बनाने में भूख–प्यास की परवाह किये बिना निरंतर लगे रहते थे।

मैं (लेखक) पढ़ने लिखने में तेज होने पर भी सामाजिक कार्यक्रमों और भाषणबाजी में भी बहुत रुचि रखता था। अतः आचार्य भगवान देव जी ने मेरी पुस्तकें आदि गुरुकुल में अलमारी में रखवाकर मुझे भी अपने साथ ले लिया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन की वह सारी पृष्ठभूमि की सामग्री मेरे दिमाग में थी जिसके कारण आन्दोलन करना पड़ रहा था। दिन या रात के समय, जहां भी आचार्य भगवान देव जी लोगों को इकट्ठा करके कार्यक्रम रखते थे, भूमिका के रूप में पहला भाषण मेरा ही होता था और मैं पूरे जोश के साथ जमकर बोलता था। फिर आचार्य भगवान देव जी विस्तार से बोलते थे। भजन मंडली भी साथ में होती थी। रोहतक और सोनीपत के लगभग सभी गांवों में हम पहुंच चुके थे।

जून 1957 के महीने में रोहतक से आन्दोलन शुरू होना था। पहला जत्था रोहतक से महाशय भरत सिंह तथा जनसंघ के एम. एल. ए. डॉ. मंगलसेन के नेतृत्व में जाना तय हुआ। पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार प्रताप सिंह कैरों ने रोहतक में आन्दोलनकारियों का दमन करने के लिए टाडा हेडी (रोहतक) के जाट डी. आई. जी. रामसिंह को रोहतक का प्रभारी बना कर भेजा। निश्चित दिन डॉ. मंगलसेन के नेतृत्व में सैंकडों की संख्या में जत्थेदारों ने आन्दोलन किया। बड़ी बर्बरता से पुलिस ने लाठियां बरसाईं। डॉ. मंगलसेन को बहुत चोट आई। स्वयं लेखक ने डॉ. मंगलसेन को उस पार्क में पिटते हुये देखा जहां वे पुलिस की लाठियों से आहत होकर गिर पड़े। इसके बाद तो समूचे पंजाब में आन्दोलन की आग लग गई। गांव से जत्थे पर जत्थे पर सत्याग्रह करके गिरफ्तारी देने लगे, पुलिस उन पर निर्दयतापूर्वक अत्याचार करके उन्हें जेलों में भेजती रही।

आचार्य भगवान देव जी के साथ मेरा अन्तिम कार्यक्रम गांव सिंहपुरा, रोहतक तक रहा। इसके बाद मैं अकेला एक भजनोपदेशक श्री ब्रह्मानन्द और उसके भाई की टीम के साथ हिन्दी आन्दोलन के गांव–गांव में प्रचार कार्य में जुट गया। इसका कारण यह था कि आचार्य भगवान देव जी पर राजद्रोह का आरोप लगाकर उन्हें देखते ही गोली मारने का वाचिक आदेश पुलिस को मिल गये। अतः वे तुरंत भूमिगत हो गये। पहले कुछ समय तक वे उत्तर प्रदेश में डॉ. वेदपाल के यहाँ बागपत बड़ौत में वेश–भूषा बदलकर कार्य करते रहे, फिर वे नेताओं की सलाह पर और भी गुप्त स्थान पर राजस्थान में पिलानी के गांवों में चले गये। वे बहुत समय तक अपने अत्यन्त विश्वासपात्र श्री बिजलाल जी के यहाँ गांव घासि कावास चिड़ावा जिला झुंझुनू जयपुर (राजस्थान), भूमिगत होकर गुप्त रूप से रहे। आन्दोलन का मुख्य केन्द्र दयानन्द मठ, रोहतक था। अतः पुलिस रात के समय दयानंद मठ पर छापा मारकर आन्दोलनकारियों को उठा लेती थी। सत्याग्रह के नेताओं को सब से पहले पुलिस ने उठाया जिनमें जगदेव सिंह सिद्धान्ती जी प्रमुख थे। उन्हें कई जेलों में से बदलते हुए अन्त में बोस्टल जेल हिसार में भेज दिया अंत में मुझे (लेखक को) भी रखा गया।

समय के साथ–साथ हिन्दी आन्दोलन भी तेज होता जा रहा था। सत्याग्रही अपने–अपने गांवों और आस–पास के स्थानों से इकट्ठा होकर बड़ी भारी संख्या में प्रतिदिन "हिन्दी भाषा अमर रहे" के नारे के साथ गिरफ्तारियां दे रहे थे। जेलें ठसाठस सत्याग्रहियों से भरती जा रही थीं। कैरों सरकार भी सत्याग्रह को कुचलने के लिए अपना दमनचक्र उग्र करती जा रही थी, सत्याग्रह के नेताओं को विशेषतः आर्यनेताओं को चुन–चुनकर पकड़ रही थी और जेल में डाल रही थी, गांव–गांव में पुलिस घूम–घूम कर पता लगा रही थी कि किस घर में सत्याग्राही बैठा है। किसानों के बैलों तक को उठा ले जाती थी। सभी वर्ग के लोगों को तंग और परेशान करने के पुलिस नये नये हथकण्डे ढूंढ़ रही थी। किन्तु ज्यों–ज्यों नेताओं की कमी उनकी गिरफ्तारी के कारण होती जा रही थी, जनता स्वयं ही अपना नेतृत्व करती जा रही थी। स्वयं जनसाधारण जत्थे तैयार कर–कर के जेल भरने के लिये आगे आते जा रहे थे। बाहर के प्रान्तों से ट्रेनें भरभर कर सत्याग्राही ओ३म का झण्डा गाड़ियों में ही लगा लगा कर कैरों सरकार की जेलें भरने के लिये अहम (पहले में) से प्रतिदिन भारी संख्या में पंजाब (हरयाणा) पहुंच रहे थे। सोनीपत और रोहतक जिले के क्षेत्र को मैंने अपना प्रचार क्षेत्र चुना था या यह क्षेत्र प्रचार करने के लिए मुझे सौंपा गया था। मेरे साथ एक भजन मंडली नियुक्त की गई थी। रात्रि के समय प्रचार का गांव निर्धारित करके भजन मंडली वहीं पहुंच जाती थी। मुझे एक मोटर साइकिल दी गई थी जिसे वैद्य बलवन्त सिंह के चालक श्री ओमप्रकाश जी चलाते थे और मैं पीछे बैठ जाता था। प्रतिदिन के सत्यग्रह और प्रचार का कार्यक्रम दयानन्द मठ, रोहतक में तैयार होता था और उसकी सूचना केवल उस कार्यक्रम से सम्बन्धित व्यक्ति को ही दी जाती थी। मुख्य कार्यालय दयानंद मठ रोहतक में प्रबंध का काम करने वाला व्यक्ति सप्ताह से अधिक नहीं ठहर पाता था क्योंकि पुलिस उसे दिन या रात में उठा कर ले जाती थी, उसके साथ और भी लोगों को जो वहाँ मिलते थे, छापा मार कर उठा ले जाती थी और जेल में डाल देती थी।

रोहतक के गढ़ी बोहर, आसन, टिटोली, सिंहपुरा, बालन्द, डीघल, बेरी, बिधलान, बहू अकबरपुर, मकडौली, बराहना आदि अनेक गांव ने सत्याग्रह में बढ़चढ़ कर भाग ले रहे थे। झज्जर के सिलानी, भदानी, रैया, डावला, आसौन्दा, सांखोल, बहादुरगढ़ आदि स्थानों से जत्थे पर सत्याग्रह करने आ रहे थे। सोनीपत से रोहणा, बरोहणा, भटिण्ड, भैंसवाल, रोहट, झरोंट, खरखोरा, गोहाना, मुरथल, मण्डोरा, मण्डोरी, हलालपुर, झिन्झोली आदि स्थानों से सत्याग्रहियों की भरमार रहती थी। इन स्थानों और गांवों के अतिरिक्त मैंने और भी अनेक गांवों में प्रचार कार्य किया और सत्याग्रही तैयार किये जिनका नाम मुझे अभी याद नहीं आ रहे। रात्रि को मैं सप्ताह में एक बार अवश्य दयानंद मठ रोहतक में आकर अपने प्रचार कार्य की रिपोर्ट करता था और अगला कार्यक्रम वहां के व्यवस्थापक से लेता था। अन्तिम दिनों में दयानन्द मठ के व्यवस्थापक जहाजगढ़ माजरा के श्री अतरसिंह जी ही रह गए थे जो बड़े हंसमुख और मजाकिया स्वभाव के थे। इन्हीं दिनों मैंने पंजाब विश्वविद्यालय की विशारद शास्त्री परीक्षा भी कुछ समय निकाल कर दी जिसमें मैं सर्वप्रथम रहा।

दिसंबर 1957 के आते–आते सत्याग्रह को 7 से 8 महीने हो चले थे। अतः अब मैंने स्वयं सत्याग्रह करने का मन बना लिया। 10 युवक साथियों को मैंने अपने साथ लिया और आर्य समाज भिवानी में सायंकाल के समय एक सभा का आयोजन किया। पुलिस को खबर लग चुकी थी। अतः चारों तरफ से आर्यसमाज के भवन को पुलिस ने घेर लिया, समाज मन्दिर के अन्दर तो नहीं आ सकती थी। अनेक लोगों ने हिन्दी आन्दोलन के विषय को लेकर भाषण

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org



# यज्ञीय पञ्चांग (3)

## मन्त्रोच्चारण का औचित्य

● पं. वेदप्रकाश शास्त्री

पं. यज्ञ में वेदमन्त्रोच्चारण का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। मनन और चिन्तन किए जाने के कारण ही इन्हें मन्त्र कहते हैं–

**मन्त्रः कस्मात् – मननात्।। निरुक्त 7/12**

पवित्र वेद ऋचाओं के शुद्धपाठ की सुन्दर परम्परा प्राचीनकाल से रही है–

**उपप्रयन्तोऽध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये।**
**आरेऽअस्मे च शृण्वते।। यजु. 3/11**

यज्ञ के समीप जाते हुए, दूर से भी हमें सुनने वाले, सबकी उन्नति करने वाले भगवान् के प्रति मन्त्र बोलें।

यज्ञ और आहुति का उद्देश्य मन्त्र में ही निहित होता है। अतः मन्त्रोच्चारण अत्यावश्यक है–

**समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।**
**अस्मिन् हव्या जुहोतन।। यजु. 3/1**

समिधा के द्वारा यज्ञाग्नि को प्रदीप्त करो। घृत की आहुतियों से अतिथि के समान गतिशील यज्ञाग्नि को बढ़ाओ। इस यज्ञाग्नि में हविद्रव्यों को अच्छी प्रकार समर्पित करो।

**सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।**
**अग्नये जातवेदसे।। यजु. 3/2**

अच्छी प्रकार से प्रदीप्त करने के लिए शुद्ध ज्वालाओं से युक्त सब पदार्थों में विद्यमान अग्नि में तपे हुए घृत आदि उत्तम पदार्थों की अच्छी प्रकार आहुतियाँ दें।

**समिद्भिः घृतेन वर्द्धयामसि।। यजु. 3/3**

घृत और समिधाओं के द्वारा अग्नि को बढ़ाएं।

अतः यज्ञ में वेदमन्त्रों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। उनकी महत्ता सर्वदा ही बनी रहेगी। मन्त्रोच्चारण के बिना उसके उद्देश्य का ज्ञान नहीं हो सकता।

महर्षि दयानन्द ने मन्त्रोच्चारण की महत्ता पर अत्यन्त मार्मिक शब्दों में प्रकाश डाला है–

**प्रश्न** – मन्त्र पढ़के होम करने का क्या प्रयोजन है?

**उत्तर** – मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जाएं और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें। वेदपुस्तकों का पठन–पाठन और रक्षा भी होवे।

स. प्र. समु. 3

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में महर्षि दयानन्द लिखते हैं–

**प्रश्न** – पुनस्तत्र वेदमन्त्राणां पाठः किमर्थं क्रियते?

**उत्तर** – अत्र ब्रूमः –एतस्यान्यद् एव फलमस्ति। किम्? यथा हस्तेन होमो, नेत्रेण दर्शनम्, त्वचा स्पर्शनं च क्रियते, तथा वाचा वेदमन्त्रा अपि पठ्यन्ते। तत् पाठेनेश्वर स्तुति–प्रार्थनोपासनाः क्रियन्ते। होमेन किं फलं भवतीत्यस्य ज्ञानं, तत्पाठानुवृत्या वेदमन्त्राणां रक्षणम्, ईश्वर स्यास्तित्वसिद्धिश्चां अन्यच्च, सर्वकर्मादावीश्वरस्य प्रार्थना कार्येत्युपदेशः। यज्ञे तु वेदमन्त्रोच्चारणात् सर्वत्रैव तत्प्रार्थना भवतीति वेदितव्यम्।

ऋ. भा. भू. वेदविषयविचारः

**भाषार्थ–**

**प्रश्न** – फिर वहाँ (यज्ञ में) वेदमन्त्रों के पढ़ने का क्या काम है?

**उत्तर** – उनके पढ़ने का प्रयोजन कुछ और ही है।

**प्रश्न** – वह क्या है?

**उत्तर** – जैसे–हाथ से होम करते, आंख से देखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं, वैसे ही वाणी से वेदमन्त्रों को भी पढ़ते हैं। क्योंकि उनके पढ़ने से वेदों की रक्षा, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना होती है। तथा होम से जो जो फल होते हैं, उनका स्मरण भी होता है। वेद के बारंबार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं तथा वेदों की रक्षा भी होती है और ईश्वर का होना भी सिद्ध होता है कि कोई नास्तिक न हो जाये। ईश्वर की प्रार्थना पूर्वक ही सब कर्मों का आरम्भ करना होता है। सो वेदमन्त्रों के उच्चारण से यज्ञ में तो उसकी प्रार्थना सर्वत्र होती है। इसलिए सब उत्तम कर्म वेदमन्त्रों से ही करना उचित है।

एक अन्य स्थान पर महर्षि कहते हैं–

जैसे यज्ञकर्म में हस्त, नेत्र, त्वचा आदि इन्द्रियों की उपयोगिता होती है, उसी प्रकार वाणी से वेदमन्त्रों का उच्चारण भी होता है। वाणी की उपयोगिता एवं सार्थकता भी वेदमन्त्रों के पाठ से है। यही वाणी का तप है।

योगिराज भगवान् श्री कृष्ण गीता में वाणी तप की विशेषता बताते हुए कहते हैं–

**अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।**

**स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।। गीता 17/15**

जो उद्वेग को न करने वाला प्रिय और हितकारक यथार्थ भाषण है और जो वेदशास्त्रों के पढ़ने का एवं परमेश्वर के नाम जपने का अभ्यास है, वह निःसन्देह वाणी सम्बन्धी तप कहा जाता है।

वस्तुतः तप सात्त्विक होना चाहिए–

**श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत् त्रिविधं नरैः।**

**अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते।। 17/17**

फल को न चाहने वाले निष्काम योगी पुरुषों द्वारा परम श्रद्धा से किए हुए उस तीन प्रकार के तप को सात्त्विक कहते हैं।

वेदभक्त कहता है–

**तपसा अभ्यपश्यम्।। ऋ. 8/59/6**

मैं तप के द्वारा ईश्वर की रचना को देखता हूँ।

**तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व।।**

तप से ब्रह्म को जानने की इच्छा करो।

**तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वान्।। ऋ. 6/5/4**

हे तपिष्ठ! तप से तपस्वी बनो और तप करो।

**तपो धर्मानुष्ठानम्।।**

धर्मानुष्ठान एक महान् तप है।

धर्माचरण करना सरल नहीं। यह एक तप है। ऐसा तपश्चरण करना महत् कठिन है। सरल, मृदु, मधुर, शान्त वाणी पर चलना भी तपस्या है। प्रत्येक व्यक्ति का वहाँ तक पहुँचना सरल नहीं।

इसीलिए यज्ञ करते हुए 'अंगस्पर्श' मन्त्र में बोलते हैं–

**'ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्तु'।।**

इस मन्त्र से अंगस्पर्श द्वारा की जाने वाली प्रार्थना की पूर्णता एवं यथार्थता भी तभी शक्य है कि जब उसका विधिपूर्वक उपयोग किया जाये अर्थात् वाक्शक्ति का वर्चस्व वाणी में यश और बल भी वेदमन्त्रों के वाचन से ही सम्भव है।

जब वाचन होगा तभी श्रवण होगा। पढ़ने–पढ़ाने और सुनने–सुनाने की परम्परा का निर्वाह भी होगा। यज्ञ में वेदमन्त्रोच्चारण के अनेक प्रयोजन हैं–

1. प्रत्येक शुभकार्य के आदि में परमेश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए।
2. मन्त्रों से हवन के लाभ भी विदित होते हैं।
3. मन्त्रों की बार–बार आवृत्ति से मन्त्र कण्ठस्थ हो जाते हैं। इससे वेदों की रक्षा होती है।
4. वेदमन्त्र का पाठ अर्थभावना के साथ हो क्योंकि–

**मन्त्राः मननात्।।** मनन करने से यह मन्त्र कहलाते हैं।

मन्त्रहीन यज्ञ तामसिक है

**विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्।**

**श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते।। गीता 17/13**

शास्त्रविधि से हीन, अन्नदान से रहित, बिना मन्त्रों के, बिना दक्षिणा के, बिना श्रद्धा के किए गए यज्ञ को तामस यज्ञ कहते हैं।

उल्लिखित प्रमाणों और तर्कों से पूर्णतः स्पष्ट है कि मन्त्ररहित यज्ञ का कोई महत्त्व नहीं।

9463428299

(क्रमशः)

# वैज्ञानिकों की दृष्टि में ईश्वर

सफलतापूर्वक परीक्षण करके यह बात प्रदर्शित नहीं की जा सकती कि घड़ी जैसा सूक्ष्मयन्त्र अकस्मात् बन गया अर्थात् उसे बनाने में किसी कारीगर के दिमाग और हाथ की जरूरत नहीं पड़ी। अपने आप चाबी लग जाने वाली घड़ी के बारे में भी यह नहीं कहा जा सकता कि किसी के चलाये बिना ही वह चल पड़ी। जब जीवित कोश के बारे में हम पूछते हैं: "सूक्ष्मदर्शकयन्त्र से ही देखे जो सकने वाले सूक्ष्म और हैरत में डालने वाले कार्यों को करने वाला यह कोश अपने वर्तमान रूप में कैसे आया? "इसमें गति कैसे प्रारंभ हुई?" तो इसकी शुरुआत या इसके कार्यकलाप के जारी रहने के कारण की व्याख्या का प्रयत्न करते हुए जब तक हम युक्ति और तर्क के साथ यह स्वीकार नहीं कर लेते कि किसी चेतन बुद्धिमान् शक्ति ने उसे अस्तित्ववान् बनाया, तब तक हमें ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा जिनसे हम पार नहीं पा सकते। वह चेतन और बुद्धिमान् सत्ता जो चिन्तन शून्य जड़ द्रव्य से नितरां भिन्न है, परमात्मा है।... यह अनुमान विज्ञान को भी ग्राह्य है और मान्य भी। मेरी यह सुनिश्चित धारणा है कि परमात्मा है।

प्रो. रलेस चार्ल्स आर्टिस्ट
(जीवविद् और वनस्पतिविद्, फ्रेंकफुर्त कालेज–जर्मनी)

www.thearyasamaj.org



# कुरीतियाँ बढ़ रही हैं

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। ऐसा आर्य समाज के छठे नियम में दिया है। शारीरिक व आत्मिक उन्नति दीर्घायु हेतु आवश्यक है परन्तु जब समाज रुग्ण हो तब उसके लिए भी उपचार आवश्यक है जिसे सत्यासत्य ज्ञान के उपदेश से समझा कर किया जा सकता है। इसके लिए जितना भी हो सके प्रचार करना ही एक विकल्प है।

आज समाज में कुरीतियाँ बढ़ रही हैं। अच्छे पढ़े लिखे लोग डॉक्टर, इन्जिनियर, आई.ए.एस., नेता अभिनेता तक पीर–मजारों पर चादर चढ़ाते, मूर्ति पूजा करते देखे जा सकते हैं, घरों में नींबू व मिर्च बांध कर दरवाजों पर लटकाते देखे जा सकते हैं। बिल्ली रास्ता काट जाए तो अपशकुन होना मानते हैं। भूत प्रेत गण्डा ताबीज में विश्वास करना देख सकते हैं और तो और क्या टी वी चैनल जितने भी चल रहे हैं उनमें कार्यरत व चैनलों पर देख रेख अथवा नियंत्रण करने वाले अधिकारी व सरकार से सम्बन्धित नहीं हैं? वह भी पढ़े लिखे ही होंगे परन्तु फलित ज्योतिष के चैनल दिन रात हनुमान यन्त्र, सुरक्षा यन्त्र, सुरक्षा कवच, मणि व पत्थर से बनी अंगूठियों का प्रचार कर जनता को दिग्भ्रमित कर रहे हैं। आज विज्ञान का युग है, सब कुछ अच्छी प्रकार से देखा परखा जाता है परन्तु फिर भी अनेक स्त्री पुरुष तांत्रिकों के तन्त्र जाल की दुनियाँ में फंसे हुए हैं और अंध विश्वासों को बढ़ावा दे रहे हैं। अपने विवेक से नहीं देखते कि सत्य क्या है, असत्य क्या है। घरों में देवी देवताओं की मूर्तियाँ जिनमें स्थान स्थान पर विभिन्न प्रकार के देवता हैं। कुछ लोग गुरुडम वाद में घिरे हैं। नए नए रूप धारण कर भोली भाली जनता को लूट रहे हैं। ये गुरु चमत्कार भी दिखाते हैं। किसी का पर्स खुलवाना, किसी को रसगुल्ले खिलाना किसी को लाल पीले वस्त्र धारण करवाने को कहते तथा सन्तान होने कोठी कार बंगला बनवाने रात–रात में धनवान होने का आशीर्वाद देते हैं। सारा ठेका इन्होंने ही ले रखा है और भोली जनता इसके जाल में फंस जाती है। अभी हरियाणा में ढोंगी रामपाल की गिरफ्तारी हुई, आशाराम जेल में है। पहले भी चन्द्रा स्वामी, धीरेन्द्र ब्रह्मचारी जेलों में रहे हैं। ऐसे ढोंगियों की संख्या नित्य प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

इधर दहेज हत्या समाचार पत्रों में टीवी आपराधिक घटनाओं वाले चैनलों पर और आस पड़ोस में बहुओं बेटियों को जला कर मारने की घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। धन के लोभी पहले तो धन व गाड़ी आदि लेने से मना करते हैं परन्तु थोड़ी बात आगे बढ़ते ही गाड़ी व नगदी आदि का दवाब बनाना आरम्भ कर देते हैं। सगाई आदि की रस्म हो जाने पर बेटी वाला दवाब में सब कुछ दे देता है परन्तु भूखे भेड़ियों का पेट नहीं भरता। दूसरे की बेटी को बहू बना कर प्रताड़ित करना आरम्भ कर देते हैं। बेटी भी अपने घर नहीं बताती और बताती भी है तो समझौता करके ससुराल वाले ले जाते हैं। वहाँ कौन देख रहा है अकेली बेटी फँस जाती है, और अधिक प्रताड़ित करते हैं। अन्त में अनेकों को मार दिया जाता है।

दहेज एक समस्या है। बारात ले जाना भी एक समस्या है। बड़े–बड़े मैरिज होम्स में लाखों का धन व्यर्थ में लगाया जाता है। आज दूल्हों का मोल भाव किया जाता है। कहते हैं शिक्षा मंहगी हो गई है–आईटीआई, पोलीटेक्निक, इन्जिनियरिंग, बी ई, मेडिकल, एम बी ए, बी सी ए, सी ए आदि कोर्स प्राइवेट में तो कई–कई लाख में हो पाते हैं, दस–पन्द्रह या बीस लाख लग जाते हैं। वह सब पैसा दूल्हे का पिता और दूल्हा बेटी वाले से झपट लेता है फिर भी अधिकांशतः बेटियाँ ससुराल में सुरक्षित नहीं। और हैं तो बहुत कम हैं। जहाँ आर्य विचार धारा व आचरण वाले श्रेष्ठ व्यक्ति होते हैं क्योंकि वैदिक धर्म ही ऐसी शिक्षा है जहाँ पराई बेटी को अपने घर में बहू के स्थान पर रख कर बेटी की भांति महत्व दिया जाता है। पहली बात तो विवाह हेतु ऐसी कोई व्यवस्था बनवाई जाये जो पूर्णतः वैदिक रीति से सम्पन्न हो और बेटी को ससुराल में यातना न मिले, घृणा से न देखा जाए। यह केवल आर्य धर्म के ज्ञान से ही सम्भव है। अतः जन–जन में आर्य धर्म के प्रति चेतना जाग्रत करनी होगी। दहेज पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए। मैरिज होम बन्द होने चाहिए। विवाह में डी जे, ढोल–ढपाड़े, बाजे बन्द हों। चमक–दमक–सजावट की सीमा रेखा निश्चित हो। बारतियों की संख्या भी निश्चित हो। वैसे भी विवाह सुझवाए जाते हैं पत्रा के अनुसार, एक ही दिन में इतने विवाह होते हैं कि मैरिज होम कम पड़ जाते हैं, रास्ते बन्द हो जाते हैं, आवागमन ही अवरुद्ध हो जाती है। बाजारों में सब्जी टैन्ट फर्नीचर दूध पनीर व अन्य सामान नहीं मिल पाता, सब्जियाँ आदि मंहगी हो जाती हैं। वाहन बस रेलों में स्थान नहीं मिलता, अन्य घटनाएं भी होती हैं जब इतनी भीड़ होती है। स्थिति भयानक हो जाती है, आतिशबाजी आदि सब प्रदूषण होकर वातावरण दूषित हो जाता है। अतः विवाह का एक निश्चित नियम सबके लिए एक समान बनाना चाहिए। धनाढ्य निर्बल सबका एक समान नियम होना चाहिए।

इधर हत्या लूट व बलात्कार की घटनाएं दिन रात सुनने व देखने में आती हैं। इनका प्रचार धारावाहिक आपराधिक घटनाओं का चित्रण व टीवी पर उन्हें धारावाहिक बना जनता के सामने परोसने से भी हो रहा है जहाँ स्त्री के अंगों का प्रदर्शन, अर्धनग्न, कामुकता की मुद्राएँ, कामुक, दृश्य, युवक युवतियों के जवानी में रंगे कामुक प्यार के दृश्य, फिल्मों में भी कामुक–दृश्य संगीत को दिखाना, भौंड़े व अश्लील संवाद जनता पर क्या प्रभाव डालेंगे? इनसे आने वाली पीढ़ी को अच्छा संदेश तो नहीं मिलेगा। वह भी यही समझेंगे कि जैसे फिल्मों में दिखाया जाता है वही करना चाहिए। टीवी तो घर–घर में प्रचार का माध्यम है।

टीवी में धारावाहिक निर्माता कहते हैं कि जो समाज में होता है वही दिखाते हैं। ऐसी बात नहीं। व्यावसायिक सिनेमा निर्माताओं ने तो नग्नता की सीमा पार कर दी है। इसे वह उन्नति बताते हैं। पोर्न व एक्स वीडियो का होना लज्जा जनक है। धन कमाने के लिए इस देश की संस्कृति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं और क्योंकि चैनल अधिकतर विदेशी हैं इसलिए हमारी संस्कृति में विष घोल कर घिनौना खेल खेला जा रहा है और जहाँ भाई–बहन, माता–पिता बैठे हों ऐसे में इन कामुक दृश्य वाले भौंड़े चित्र व संवाद युक्त धारावाहिकों का क्या उपयोग है? यह समाज को क्या शिक्षा दे रहे हैं? इनसे समाज में सांस्कृतिक प्रदूषण ही बढ़ रहा है। व्यक्ति युवा अपने इतिहास के गौरव से अपनी संस्कृति से दूर हो चका चौंध के भटक रहे हैं।

इन आधुनिक व्याधियों का समाधान आर्यों के पास ही है जो उनके सत्योपदेश प्रचार कार्यों को बढ़ा कर करने, गति लाने से ही सम्भव होगा।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश)

---

# त्रिफला

● सुमनरानी गोयल

भारतीय शास्त्रों के अनुसार अमृत मन्थन के समय अमृतकलश लेकर महाराज धन्वन्तरि उत्पन्न हुए थे जो सर्वप्रथम वैद्यराज माने गये हैं। आयुर्वेद शास्त्र की रचना सर्वप्रथम इन्हीं के द्वारा की गयी है। क्योंकि इसके द्वारा ही प्राणी मात्र निरोगी होता है इसी कारण शास्त्रों में आयुर्वेद को 'अरोग्य शास्त्र' या 'आयु का विज्ञान' कहा गया है जिसमें विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों, जड़ी–बूटियों जो पहाड़ों, वनों–जंगलों तथा हमारे आसपास में पायी जाती हैं और जिनको औषधि भी कहा जाता है, द्वारा ही शरीर में निर्मित होने वाली विभिन्न प्रकार की व्याधियों का उपचार करके मानव आयु को बढ़ाया जाता है। इनमें ही एक औषधि 'त्रिफला' है।

त्रिफला जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है तीन फलों से युक्त औषधि है। यह औषधि विभिन्न अनुपानों से विभिन्न ऋतुओं में विभिन्न रोगों में समान रूप से कार्य करती है और विलक्षण परिणाम देती है। इस औषधि में तीन घटक मुख्य माने गये हैं–प्रथम घटक हरीतिकी है जिसको जनसाधारण भाषा में हरड़ कहा जाता है, द्वितीय घटक विभीतिकी है जिसको आम भाषा में बहेड़ा कहा जाता है तथा तीसरा घटक आमलकी है जिसको जनसाधारण की भाषा में आमला कहा जाता है।

आयुर्वेद का एक मुख्य ग्रन्थ निघन्टु है। निघन्टु में कहा गया है–

**एका हरीतिकी योज्या द्वौ च योज्यौ विभीतिकी**
**चत्वार्यामलकान्येव त्रिफलैषा प्रकीर्तिता।**

अर्थात् इस औषधि के निर्माण में एक भाग हरीतिकी, दो भाग विभीतिकी तथा चार भाग आंवले को प्रयोग किया जाता है। इन तीनों घटकों को भली भांति साफ करके सुखा कर कूट करके चूर्ण बना कर कपड़ छन्न कर लिया जाता है तथा नित्यप्रति प्रयोग में लाया जाता है।

आयुर्वेद में आमला को रसायन कहा गया है। ऐसा माना जाता है कि इसके निरन्तर प्रयोग से मनुष्य कभी रोगी नहीं होता है तथा उसको बुढ़ापा कभी नहीं आता है। महर्षि च्यवन ऋषि ने आंवले का प्रयोग करके ही अपने को चिरकाल तक युवा बनाये रखा था। अपने को चिरकाल तक युवा बनाये रखने के लिए ही उन्होंने एक अवलेह तैयार किया था जिसको च्यवनप्राश कहा जाता है। मात्र आंवला ही च्यवनप्राश का मुख्य घटक है। इसके विषय में ऐसा माना जाता है कि आज भी यदि यह, इसमें प्रयोग होने वाले समस्त घटकों सहित, विधिपूर्वक तैयार किया जाये और निरन्तर प्रयोग किया जाये तो मनुष्य कभी रोगी नहीं होता है, चिरकाल तक युवा बना रहता है और अपनी पूर्ण आयु को प्राप्त होता है।

आयुर्वेद शास्त्र में माना गया है कि त्रिफला एक रसायन औषधि है। इसके नियम पूर्वक नित्यप्रति ऋतु अनुपान अनुसार प्रयोग करने से मनुष्य आजीवन निरोगी बना रहता है। उसको डाक्टरों, हकीमों के द्वार पर कभी भी नहीं जाना पड़ता है।

आयुर्वेद शास्त्र कहता है कि–

**सितायुक्ता च शरदि हेमन्ते नागरेण च**
**शिशिरे पिप्पीयुक्त वसन्ते मधुना सहे।**

अर्थात शरद ऋतु में इसको मिश्री के साथ खाया जाता है, हेमन्त ऋतु में सोंठ के साथ प्रयोग किया जाता है, शिशिर ऋतु में छोटी पीपल के साथ प्रयोग किया जाता है, वसंत ऋतु में शहद के साथ प्रयोग किया जाता है।

**ग्रीष्मे च गुड़संयुक्ता वर्षासु लवणेन च**
**अनेनैव विधानेन भक्षयेद्यो हरीतिकीम।**

अर्थात ग्रीष्म ऋतु में गुड़ के साथ, वर्षा काल में सैंधा नमक के साथ प्रयोग किया जाता है।

आयुर्वेद शास्त्र कहता है कि

**त्रिफला शोथमेह्घ्नी नाश्येद्विषमज्वरान्**
**दीपनी श्लेष्मपित्तघनी कुष्ठहंत्री रसायनी**
**सर्पिर्मगुभ्यां संयुक्ता सैव नेत्रामयान् जयेत।**

त्रिफला चूर्ण का नित्य प्रति सेवन करने से शोथ, प्रमेह, विषमज्वर, कफ, पित्त व कुष्ठ आदि रोग जड़ से मिट जाते हैं। बल वीर्य नित्य प्रति वर्धित होता है। मन्दाग्नि दीप्त हो जाती है, अपचन नष्ट हो जाता है तथा मनुष्य निरोगी रह कर अपनी पूर्ण आयु को प्राप्त होता है। रात्रिकाल में शहद या घी के साथ सेवन करने से समस्त नेत्ररोग दूर हो जाते हैं।

113–बाजार कोट
अमरोहा–244221

www.thearyasamaj.org



☞ पृष्ठ 02 का शेष

# मानव जीवन गाथा...

गर्मी आ गई। जो अचेतनता आ रही थी वह भी समाप्त हो गई। हम लोग दारचन मण्डी से आगे पहुँचे। मैं एक स्थान पर कम्बल बिछाकर भजन करने के लिए बैठ गया। उस समय बैठे–बैठे विचार आया कि ये ग्यारह नदियाँ जिन्हें पार करके आया हूँ, क्या हैं? तभी ध्यान आया कि हम कैलास की ओर जा रहे हैं, जिसके सम्बन्ध में लोग कहते हैं कि वहाँ भगवान् शिव रहते हैं। भगवान् के पास पहुँचने से पूर्व ये ग्यारह नदियाँ पार किये बिना तो कार्य चलता नहीं। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कार्मेन्द्रियाँ, तब सबसे बड़ी, सबसे वेगवती यह ग्यारहवी नदी मन, इन सबको पार किये बिना मनुष्य कैलासपति सच्चे शिव तक कैसे पहुँच सकता है? इन ग्यारह नदियों से व्यक्ति ढका हुआ है। इन पर विजय प्राप्त किये बिना आत्मदर्शन कभी हो नहीं सकता।

इस शरीर में जिस प्रकार आत्मा प्रत्येक कार्य को चलाता हुआ शरीर का स्वामी बनके बैठा है, वैसे ही इस संसार को चलाता हुआ ईश्वर संसार का स्वामी बनके प्रत्येक वस्तु के अन्दर विद्यमान है। इन्द्रियों के पर्दे को हटाकर जिस प्रकार आत्मा के दर्शन होते हैं, इसी प्रकार प्रकृति के पर्दे को हटाकर ईश्वर का दर्शन होता है।

यह है सीधी बात। परन्तु संसारवाले तो इसे मानते नहीं। वे कहते हैं, "ईश्वर है तो दिखाओ कहाँ है?"

एक था पिता, कम्युनिस्ट विचारों का। ईश्वर है, ऐसा वह नहीं मानता था। उसका पुत्र पढ़ा था एक आर्य कॉलिज में। उसके मन पर दूसरी छाप पड़ी। वह प्रातः–सायं भजन के लिए बैठ जाता, ईश्वर का नाम लेता, उसे स्मरण करता। पिता इसको सदा कहता, "यह तुम क्या समय नष्ट करते रहते हो? संसार में कोई ईश्वर नहीं। जिसका तुम नाम लेते फिरते हो, उसका कोई अस्तित्व नहीं।" पुत्र उसे कहता, "यदि ईश्वर नहीं तो फिर सृष्टि किसने रची है?" पिता कहता, "यह सब–कुछ गर्मी और गति का परिणाम है। प्रत्येक वस्तु में उष्णता है, गति है। पता नहीं कब यह उष्णता बहुत बढ़ी, इसके कारण कहीं कुछ बन गया, कहीं कुछ। स्वयं यह सब–कुछ हो गया। इसे बनानेवाला कोई नहीं।" पुत्र ने सोचा, अपने पिता को किस प्रकार समझाऊँ? कॉलिज में गया, तब भी यह विचार उसके मन में था। एक बड़ा–सा कागज लेकर सुन्दर रंगों के साथ वहाँ उसने एक चित्र बनाया। बनाकर घर में लाया। उसे कमरे में रख दिया जिसमें उसका पिता सोया रहता था। पिता कार्यालय से लौटा तो उसने चित्र को देखा; पुत्र से बोला, "यह चित्र किसने बनाया? यह तो बहुत सुन्दर बना है।" पुत्र ने कहा, "किसी ने बनाया तो नहीं, अपने–आप ही बन गया है।" पिता ने आश्चर्य से कहा, "अपने–आप?" पुत्र ने कहा, "हाँ पिता जी, कॉलिज में कागज के रिम पड़े थे, उनमें उष्णता और गति आई तो एक रिम से यह कागज उड़कर मेज पर आ गया। एक अल्मारी में रंग भी पड़े थे। उन्हें गर्मी जो लगी तो उनके अन्दर शक्ति आ गई। अल्मारी से निकलकर वे कागज पर गिर पड़े, उसके ऊपर फैल गये और यह चित्र बन गया।" पिता ने क्रोध के साथ कहा, "मुझसे उपहास करता है? मूर्ख! स्वयं यह बात कैसे हो सकती है?" पुत्र ने कहा, "वैसे ही पिता जी, जैसे स्वयं यह सृष्टि बन गई। यदि गर्मी की शक्ति से स्वयमेव इतनी बड़ी सृष्टि बन सकती है, तो क्या यह छोटा–सा चित्र नहीं बन सकता?" तब उसके पिता को समझ आई।

लाहौर में एक देवगुरु भगवान् होते थे। वे ईश्वर को नहीं मानते थे। वे प्रायः कहते थे, "यदि ईश्वर है तो मेज पर रखे पानी के गिलास को पी जाये, या इस कमरे में झाड़ू दे दे, और कुछ नहीं कर सकता तो यह मिट्टी का ढेला ही उठा ले, और यदि यह सब–कुछ नहीं कर सकता तो निश्चित रूप से संसार में कोई ईश्वर नहीं है।"

बाद में देवगुरु को माननेवालों ने उसी को भगवान् कहना आरम्भ कर दिया। उसी की पूजा आरम्भ कर दी। वास्तविक बात यह है कि ईश्वर के बिना मनुष्य का निर्वाह होता नहीं। किसी–न–किसी वस्तु की वह पूजा करेगा अवश्य। यश जी पिछले दिनों रूस गये। वहाँ से आकर उन्होंने बताया कि रूस में बहुत–से लोग ईश्वर को नहीं मानते; परन्तु लेनिन और स्टालिन की पूजा वैसे ही करते हैं जैसे प्राचीन रूसी ईश्वर की करते थे। लेनिन और स्टालिन की लाशों को विभिन्न प्रकार के मसालों से सुरक्षित करके शीशे की पेटियों में रख दिया गया है। लोग आते हैं, हाथ जोड़कर उन्हें नमस्कार करते हैं, उनके सामने सिर झुकाते हैं, उनपर फूल चढ़ाते हैं, प्रार्थना करते हैं, मन्नत माँगते हैं और चले जाते हैं। पुराने ईश्वर के स्थान पर नये ईश्वर उन्होंने बना लिये हैं, क्योंकि ईश्वर के बिना मनुष्य रह नहीं सकता।

परन्तु स्टालिन और लेनिन बहुत बड़े महापुरुष होने पर भी ईश्वर तो नहीं हो सकते। ईश्वर वह है जो इस सारे संसार में अरबों मील दूर चमकनेवाले सितारों में, सूर्यों में और संसार के प्रत्येक कण में विद्यमान है। जिस प्रकार ईश्वर संसार के कण–कण में व्याप्त है, उसी प्रकार आत्मा इस शरीर में फैला हुआ है।

क्रमशः....

☞ पृष्ठ 06 का शेष

# 1957 का हिन्दी रक्षा...

दिये, अन्त में मेरा भाषण हुआ। मैं सभा की समाप्ति के बाद अपने साथियों – सत्याग्राहियों को साथ लेकर "हिन्दी भाषा अमर रहे" के नारे लगाता हुआ मन्दिर से बाहर निकला जनता की भारी भीड़ हमारे पीछे थी। समाज मन्दिर से बाहर निकलते ही पुलिस ने मुझे मेरे दस साथियों के सहित गिरफ्तार कर लिया। हमें पूरी रात भिवानी की कोतवाली में बंद रखा और अगले दिन मुझे बोस्टल जेल हिसार भेज दिया जहाँ श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती, शिलानी (झज्जर) के प्रसिद्ध एडवोकेट चौ. मनफूल सिंह आदि नेता पहले से ही मौजूद थे। उनके बीच पहुंचकर मुझे बहुत प्रसन्नता और सकून मिला। मुझे किसी ने बता दिया था कि आप के प्रचार कार्य की रिपोर्ट पुलिस के पास पहुंच चुकी है और पुलिस आपको (ब्र. महावीर को) ढूंढ़ रही है।

जेल में जाकर मेरी सारी थकान दूर हो गई। किन्तु अधिक दिन जेल में रहना नसीब नहीं हुआ। सत्याग्रह के भाग्य का निर्णय पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री स. प्रताप सिंह कैरों के हाथों से निकल कर भारत सरकार के हाथों में जा चुका था जिसके प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू और गृह मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत थे। बातचीत चल रही थी। सत्याग्रह के के पक्ष से बातचीत करने वाले श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त थे जिन्होंने लोकसभा के स्पीकर पद से हिन्दी आन्दोलन के कारण त्यागपत्र दिया था। हम जेल में मस्त थे कि 8 जनवरी 1958 को एक दम अचानक हमें खबर मिली कि केन्द्र सरकार ने हिन्दी आन्दोलन की सभी शर्तें मान ली हैं और आन्दोलन स्थगित हो गया है और जेलों में बंद सभी सत्याग्रहियों को रिहा किया जा रहा है। जेल के मुख्य द्वार पर हम सभी सत्याग्रहियों का स्वागत करने के लिए आर्य समाज हिसार के अनेक गणमान्य आर्य बंधु माला लेकर खड़े हुये थे। हमें आर्य समाज हिसार में ले गये, भोजन और जलपान आदि से हमारी उन्होंने आदरपूर्वक भरपूर सेवा की और तत्पश्चात हमें अपने अपने गन्तव्य के लिए विदा किया।

यह उल्लेखनीय है कि बाबू रघुवीर सिंह बहू अकबरपुर (रोहतक) जैसे अनेक सरकारी उच्च पदों पर आसीन अधिकारियों का सक्रिय सहयोग हिन्दी रक्षा आन्दोलन को प्राप्त था जिन्हें सरकारी अनुशासनात्मक कार्यवाही का शिकार होना पड़ा किन्तु उन्होंने कभी भी इसकी परवाह नहीं की।

फिर क्या था, नगर–नगर और ग्राम–ग्राम सत्याग्रह की विजय के जयकारों के नारे से गूंज उठा, उत्सवों और महासम्मेलनों के कार्यक्रम की भरमार समूचे प्रदेश में हो गई, सत्याग्रह के आर्य नेताओं का स्वागत फूलमालाओं और धनराशि भेंट, भाषणों की गूंज एक जीवन्त माहौल से प्रदेश महक उठा। गढ़ी सांपला में समूचे प्रदेश का महासम्मेलन अबोहर फाजिल्का की जेल में पुलिस द्वारा निहत्थे सत्याग्रहियों पर किये गये लाठी चार्ज में शहीद हुए सुमेरसिंह की स्मृति और श्रद्धांजलि के तौर पर आयोजित किया गया जिसमें पं. प्रकाशवीर सिंह जी के भावभीने, जोशीले और धाराप्रवाह भाषण से आर्य जगत् एक नये जीवन से आप्लावित हो गया। हिन्दी रक्षा महिलाओं का गीत बन गया था।

आचार्य भगवान्देव ने मुझे रोहतक और सोनीपत जिले के गांवों के सत्याग्रहियों का पूरा विवरण इकट्ठा करने का काम सौंपा ताकि हिन्दी रक्षा आन्दोलन का वृहद इतिहास लिखा जा सके। मैंने यथाशक्ति विवरण संग्रह कर के आचार्य जी को सौंप दिया। प्रिंसिपल रणजीतसिंह, रोहतक ने आन्दोलन का इतिहास लिखा, मेरे द्वारा संग्रहीत सामग्री का भरपूर उपयोग उस में किया गया जो हरियाणा आर्य प्रतिनिधि, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित हुआ। यह इतिहास कई सौ पृष्ठों का है।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन का प्रत्यक्ष परिणाम यह हुआ कि 1966 में तत्कालीन पंजाब से अलग हरियाणा प्रान्त का निर्माण हुआ जो आज एक स्वतंत्र और विकसित प्रदेश है जिसमें अपना शासन और अपनी भाषा है अन्यथा पंजाब और पंजाबी की दासता में हरियाणा और हिन्दी को पनपने का अवसर नहीं मिलता। पंजाब में विशेषतः आर्य समाजी हिन्दी के भक्त तो पहले से ही थे, दिल्ली तक के पंजाबी आर्यसमाजी तो अभी भी अपने मातृभाषा हिन्दी ही लिखवाते हैं। पंजाब (हरियाणा संयुक्त) प्रान्त को छोड़कर देश के अन्य प्रान्तों से आने वाले सत्याग्रही जत्थों का प्रबन्ध तथा व्यवस्था करने की जिम्मेदारी दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली के तात्कालिक प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने ली थी।

अगले वर्ष सन् 2016 में हिन्दी रक्षा आन्दोलन के 60 वर्ष पूरे हो रहे हैं। आर्य समाज और उसकी शिरोमणि सभायें अभी से उसे मनाने की तैयारी में लग जायें।

वेदमार्तण्ड डॉ महावीर मीमांसक
E-mail-amitviharpachim@rediffmail.com
मो. 9811960640

www.thearyasamaj.org



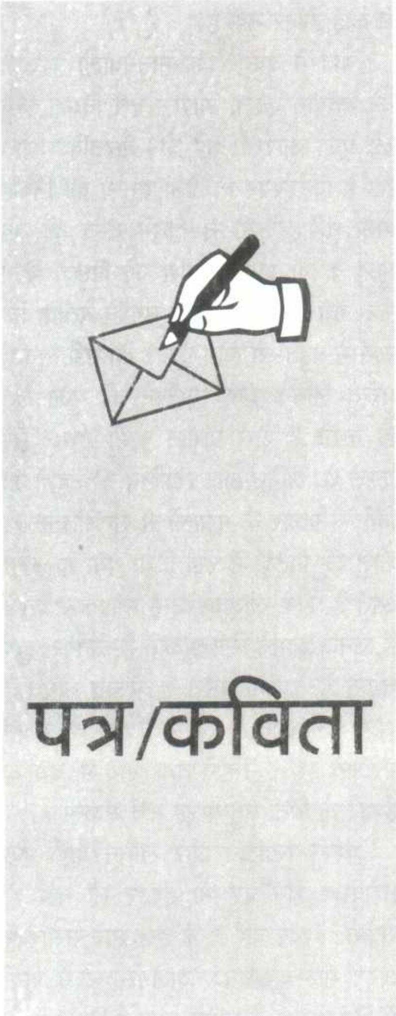


## उठो दयानन्दी सिपाहियो

उठो दयानन्दी सिपाहियो समय पुकार रहा है।
देश द्रोह का विषधर फन फैला फुन्कार रहा है।।

उठो विश्व की सूनी आंखें काजल मांग रही हैं।
उठो अनेकों द्रुपद सुताएं आंचल मांग रही हैं।
मरघट को पनघट सा कर दो जग की प्यास बुझा दो।
भटक रहे जो मरुस्थलों में उनको राह सुझा दो।
गले लगा लो, उनको जिनको जग दुत्कार रहा है।।1 ।।
उठो दयानन्दी................

तुम चाहो तो खारे जल को, सोम बना सकते हो।
तुम चाहो तो पत्थर को भी मोम बना सकते हो।।
तुम चाहो तो बंजर में भी बाग लगा सकते हो।
तुम चाहो तो पानी में भी आग लगा सकते हो।
जातिवाद जग की नस-नस में ज़हर उतार रहा है।।2 ।।
उठो दयानन्दी................

याद नहीं क्या भूल गए जो ऋषि को वचन दिया था।
शायद वादा भूल गए जो, ऋषि से कभी किया था।
वचन दिया था ओ३म् पताका कभी न झुकने देंगे।
हवन कुण्ड की आग घरों से, कभी न बुझने देंगे।
लहु शहीदों का गद्दारों को धिक्कार रहा है।।3 ।।
उठो दयानन्दी................

कैसे आज बुझा पाओगे आग बहुत फैली है।
उजली-उजली दिखने वाली हर चादर मैली है।
लेखराम का लहु पुकारे अब तो आंखें खोलो।
एक बार मिलकर सारे ऋषिवर की जय तो बोलो।
वेद ज्ञान का व्यथित सूर्य अब तुम्हें निहार रहा है।।4 ।।
उठो दयानन्दी................

तुम बिन भला सत्य का बोलो कौन प्रचार करेगा।
रोगी मानवता का क्या कोई उपचार करेगा।
सत्य असत्य विवेक विधा पर कौन विचार करेगा।
दुखी दलित संसार कौन इस पर उपकार करेगा।
ढोंगी व्यापारी लाशों का कर व्यापार रहा है।।5 ।।
उठो दयानन्दी................

भक्तजनों को तुम ही सच्चा शंकर दे सकते हो।
जटिल प्रश्न का तुम ही केवल उत्तर दे सकते हो।
सिसकी वाले आंगन को तुम सरगम दे सकते हो।
जितने भी घायल हैं सबको मरहम दे सकते हो।।
दो पछाड़ उसको जो मानवता को मार रहा है।।6 ।।
उठो दयानन्दी................

अगर सो गये जग का भाग्य सितारा सो जायेगा।
तुम जागे तो भू पर फिर से परिवर्तन आयेगा।
सोने वालो जागो जो सोए हैं उन्हें लगा दो।
ढोंग रूढ़ियों के मलबे में फिर से आग लगा दो।
मनुज-मनुज का आज रक्त से कर श्रृंगार रहा।।7 ।।
उठो दयानन्दी................

लेकिन पहले दुनिया से तुम खुद को आर्य बनाओ।
अपने वैर भाव को छोड़ो फिर जग को समझाओ।
जिस दिन अपनी सोई कोई शक्ति जाग जाएगी।
तभी 'मनीषी' दुनिया की, हर विकृति भाग जाएगी।
ऋषिवर का सद्-ज्ञान मांग, तुमसे विस्तार रहा है।।8 ।।
उठो दयानन्दी................

**डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी'**

## अथ दयानन्द उवाच

योगेश्वर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कहा है कि :-

1. "मैं प्रथम कोटि का योगी नहीं हूँ, केवल मध्यम कोटि का हूँ, परन्तु मैं अपनी चेतना शक्ति को शरीर के किसी भी भाग में केन्द्रित कर सकता हूँ, अर्थात् उस भाग को छोड़कर मेरे शरीर के अन्य भाग मृत्युवत् हो जायेंगे। यदि आप यह दृश्य देखना चाहें तो मैं आपको दिखा सकता हूँ। जबकि मैं एक मध्यम कोटि का योगी इतना कर सकता हूँ तो यह सम्भव है कि एक उच्च कोटि का योगी इससे एक पद आगे बढ़कर अपने आत्मा को दूसरे शरीर में प्रविष्ट कर सके।" (महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र, भाग-2, पृष्ठ 246-247)

2. "योगी सर्वदा विचारपूर्वक दूसरे के लिये हितकर वाक्य ही बोलते हैं। अल्प वाक्य प्रयोग करते हैं। कभी कभी मौन भी धारण करते हैं। सत्य स्वरूप परमात्मा के ध्यान में ही योगी अधिक समय बिताते हैं।" (योगी का आत्म चरित्र)

3. "ऋषियों के अभाव में आप लोग मुझे ऋषि कह रहे हैं, परन्तु सत्य जानिये यदि मैं कणाद ऋषि का समकालीन होता तो विद्वानों में भी अति कठिनता से गिना जाता।" (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश)

4. "चित्त की वृत्तियों को सब बुराइयों से हटा के शुभ गुणों में स्थिर करके परमेश्वर के समीप में मोक्ष को प्राप्त करने को योग कहते हैं।" (योग. 1-2, ऋ. भा. भूमिका, उपासनाविषय)

5. "परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। इसका फल पृथक् होगा, परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है?" (स. प्र., स समु.)

6. "जो मनुष्य जगत् का जितना उपकार करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा।" (ऋ. भा. भूमिका, वेदोक्तविषय)

7. "जैसे सांसारिक सुख शरीर के आधार से भोगता है, वैसे परमेश्वर के आधार से मुक्ति के आनंद को जीवात्मा भोगता है। जितना ज्ञान अधिक होता है, उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है।" (स. प्र. , नवम समु.)

8. "यह भूमि और भवन पहले भी अपने पास नहीं था और अन्त में भी अपने पास नहीं रहेगा। बीच में यों ही ममता बाँधना कहाँ की बुद्धिमानी है? अतः इस ममता को छोड़ो और लोकहित के कार्यों में लग जाओ।" (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश)

9. "कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि होता है।" (स. प्र., अष्टम समु.)

10. सन् 1857 में अंग्रेजों ने तोपों से रणछोड़ जी के मन्दिरों व मूर्तियों को उड़ा दिया था, उस प्रसंग में महर्षि ने यह वाक्य लिखाः- "जो श्रीकृष्ण के सादृश्य कोई होता तो इसके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते।" (स. प्र., एकादश समु.)

**राजयोगी, आचार्य भद्रकाम वर्णी**
**आर्य समाज मन्दिर, मिन्टो रोड**
**नई दिल्ली-110002**

**********

## आदर्श गृहस्थ से सीखना चाहिए

धर्मग्लानि के समय जब परमात्मा अवतरित होते है तो सत्य धर्म की स्थापना और अधर्म नाश का कार्य गृहस्थ में रहने वाले पांडवो के द्वारा ही करवाते है। अधर्मियों के धन पर पलने वाले धर्माचार्य, कौरव यानि अधर्म-पक्ष का ही साथ देते है, महाभारत, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इतना ही नही, राम-रावण, युद्ध के समय भी किसी धर्माचार्य ने राम का साथ नहीं दिया था। बल्कि साधारण जनता जिसे हम राम की वानर सेना कहते हैं, उसी ने साथ दिया था, ऐसे में धर्माचार्य आत्ममन्थन करें कि ऐसा गृहस्थ, जो जोख़िम उठाता है, मुसीबतें झेलता है, धर्म युद्ध के समय राम का साथ देता है, ऐसे आदर्श गृहस्थ से सीखना चाहिए या उन्हें उपदेश पिलाने चाहिए?

**अर्जुनः 09213322413 4**

**********

www.thearyasamaj.org



# डी.ए.वी. पटना क्षेत्र में वेद प्रचार सप्ताह एवं श्री कृष्ण जयन्ती समारोह धूमधाम से सम्पन्न

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशानुसार आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा बिहार एवं प्रक्षेत्र के संयुक्त तत्वावधान में पटना प्रक्षेत्र के सभी डी.ए.वी. विद्यालयों में (रक्षा बन्धन) श्रावणी उपाकर्म से प्रारंभ कर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह श्री इन्द्रजीत राय उप प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा बिहार सह सहायक क्षेत्रीय निदेशक बिहार प्रक्षेत्र–1 पटना के नेतृत्व में धूम–धाम से मनाया गया।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पटना में वेद प्रचार सप्ताह आर्य समाज मन्दिर के सभागार में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, आर्य समाज परिसर, न्यू बेली रोड, दानापुर के संयोजकत्व में यज्ञ–हवन के साथ प्रारंभ हुआ।

यज्ञोपरान्त मंचीय कार्यक्रम आर्य समाज के सभागार में दीप प्रज्ज्वलन के साथ शुरू हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री ब्रजेश मेहरोत्रा (**I.A.S**) मुख्य सचिव बिहार सरकार थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुरेश कुमार भारद्वाज (**I.P.S**) पूर्व डी.जी.पी. बिहार विराजमान थे।

श्री इन्द्रजीत राय जी ने स्वागत भाषण में आये मेहमानों को स्वागत करते हुए श्री कृष्ण के जीवन से प्रेरित हो संघर्षशील एवं पुरुषार्थी बनने पर जोर दिया तथा बताया कि श्री कृष्ण ने आजीवन सुख–चैन के दिन नहीं देखे। उनका जीवन संघर्षमय ही रहा है। अतः विद्यार्थियों को आज के परिस्थितियों में संघर्षशील बन कर आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर विद्यार्थियों में श्री कृष्ण के जीवन तथा कार्यों से शिक्षा लेने के लिए वेदमंत्रोच्चारण, गीता श्लोकोच्चारण एवं फैंसी ड्रेस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था।

वेद मंत्र प्रतियोगिता, में यजुर्वेद के मंत्रों की मनमोहक प्रस्तुति देखकर आर्यजन गद्गद् हो रहे थे।

गीता श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता में चौदह विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

विशिष्ट अतिथि श्री एस.के. भारद्वाज जी ने अपने वक्तव्य में श्री कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर ऊँच–नीच का भेदभाव मिटाकर एक सभ्य समाज का निर्माण करने पर बल दिया।

मुख्य अतिथि श्री ब्रजेश मेहरोत्रा जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में वेदों की अपौरुषेयता पर आधुनिक इतिहास का मत बताते हुए श्री कृष्ण के आदर्श जीवन से शिक्षा लेकर राष्ट्र निर्माण की दिशा में सहयोग करने को कहा एवं डी.ए.वी. संस्थाओं की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

कार्यक्रम के अन्त में डॉ. बी. एस. ओझा प्राचार्य डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बी.एस.ई.बी. पटना ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए छात्र–छात्राओं को श्री कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर संकल्प लेने को कहा।

कार्यक्रम का संचालन श्री अरविन्द शास्त्री एवं श्रीमती संगीता वर्मा ने किया। जय घोष तथा शान्ति पाठ के पश्चात् सभी लोगों ने सुस्वादु ऋषिलंगर का आनन्द लिया।

# डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर में वेद प्रचार के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। जिस का शुभारंभ हवन–यज्ञ में आहुति डाल कर प्राचार्या महोदया, विद्यार्थियों और अध्यापकगणों द्वारा किया गया। आर्य युवा समाज द्वारा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इस प्रतियोगिता में बी.एड, एम.एड, तथा ई.टी.टी विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस सप्ताह की विस्तृत जानकारी देते हुए कि भाषण का विषय मुख्य रूप से वेदों का अर्थ, महत्त्व, वेदों का सार, वेद मन्त्रोच्चारण का महत्त्व, आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित था। उन्होंने बताया कि वेद आज के वैज्ञानिक जीवन में अपनी बड़ी महत्ता रखते हैं। विद्यार्थियों ने अलग–अलग विषयों के ऊपर भाषण करके विचार प्रस्तुत किए। इससे विद्यार्थियों के ज्ञान में बहुत संवर्द्धन हुआ। इस भाषण प्रतियोगिता का निर्णय डॉ. सुनीता छाबड़ा तथा श्री अजय खोसला जी द्वारा किया गया। उन्होंने विद्यार्थियों को अभिप्रेरित किया।

वेद प्रचार के मुख्य वक्ता श्री वेद प्रकाश शास्त्री जी रहे। श्री वेद प्रकाश शास्त्री जी ने बताया कि जीवन में संतुलन कायम रखने के वेदों का ज्ञान जरूरी है। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की व्याख्या की और वेद के मन्त्रों के अनेक संदर्भों के साथ–साथ अर्थ बताए।

भाषण प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कॉलेज प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) उर्मिल सेठी तथा आर्य युवा समाज के इंचार्ज की तरफ से श्री वेद प्रकाश शास्त्री जी को दोशाला ओढ़ा कर हार्दिक धन्यवाद किया गया।

# डी.ए.वी. कैण्ट एरिया गया में हुआ, संस्कृत दिवस समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कैंट एरिया, गया के सभागार में आयोजित संस्कृत दिवस समारोह आयोजित के अवसर पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बिहार प्रक्षेत्र के निदेशक डॉ. यू. एस. प्रसाद ने इस की समारोह का आरंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं स्वस्तिवाचन से शुरू हुआ।

मंच का संचालन श्रीमती निशी सिन्हा एवं कक्षा नवम्– 'अ' की छात्रा संस्कृति सिन्हा ने पूर्णतः परिनिष्ठित संस्कृत शब्दों द्वारा किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. (प्रो.) मुनेश्वर प्रसाद, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, मगध विश्वविद्यालय, गया ने संस्कृत का भाषाशास्त्रीय रूपरेखा का विशद् विवेचन किया। उन्होंने संस्कृत को प्राचीन भाषा बताया तथा अंग्रेजी फादर, मदर, नियर, आदि शब्दों को संस्कृत के पितृ, मातृ आदि के साथ विश्लेषणात्मक व्याख्यान द्वारा सिद्ध किया।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, डेहरी, बिहार के प्राचार्य श्री वासुकी प्रसाद ने कहा कि भारत में कहीं अधिक विदेशियों ने इसे अपनाया है।

संस्कृत दिवस समारोह के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 'वाद–विवाद', प्रश्नोत्तरी, श्लोक वाचन, मंत्रोच्चारण, अंत्याक्षरी, संस्कृत–सम्भाषण, एकांकी आदि को सम्मिलित किया गया। वाद–विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान संस्कृति सिन्हा, भाषण प्रतियोगिता में केतन सिन्हा, मंत्रोच्चारण में दिवाकर अमन एवं अंत्याक्षरी तथा एकांकी में 'ब्रह्मपुत्र हाउस' के बच्चों ने जीत सुनिश्चित किया। इन प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन में विद्यालय के अध्यापक श्री गिरीश शर्मा, अभिषेक कुमार पाण्डेय आदि की मुख्य भूमिका रही।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए विद्यालय की उपाचार्या डॉ. श्रीमती उषा श्रीवास्तव ने कहा–संस्कृत आज सबों के लिए आवश्यक है। आज समाज में भय, अनाचार का बोलाबाला है जिसे संस्कार द्वारा ही दूर किया जा सकता है तथा संस्कार संस्कृत से ही आ सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 28/29-09-2016
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39\57

॥ ओ३म् ॥

ऋग्वेद यजुर्वेद

# अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन

२०७३ कार्तिक ४-६, (October 20-22, 2016)
स्थान : टुँडिखेल, काठमाडौं

महर्षि दयानन्द सरस्वती

## हार्दिक निमन्त्रणा

अमर सहिद शुक्रराज शास्त्री

### आदरणीय देश-धर्मानुरागी मातृशक्ति तथा सज्जनवृन्द !

नेपाल प्राचीन ऋषिमुनियों की पवित्र तपस्थली रही है। कैलाशपति भगवान् शिव ने इसी पवित्र भूमि में साधना और योगाभ्यास करके संसार को आलोकित किया था। इस क्षेत्र की विभूति राजर्षि जनक एवं माता सीता की साधना और चरित्र का इतिहास संसार के लिए आज भी प्रेरणास्पद है। इसी धरा धाम में भगवान् बुद्ध ने जन्म लेकर संसार को शान्ति और अहिंसा का पाठ पढाया था। गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी नारीयों, महर्षि याज्ञवल्क्य, महर्षि ऋंङ्गी, पाणिनि, पतंजलि जैसै ज्ञान और चेतना के आलोक से संसार को आत्मिक साधना, शब्द साधना और सामाजिक उत्थान के मंत्रों की साधना एवं सिद्धि प्रदान करने वाली महत्तम वैशिष्ट्य से परिपूर्ण तपःपूत तपस्वियों की साधना स्थली हे नेपाल।

ऐसे पवित्र तपःस्थली में कालान्तर में समाज में जो अन्धविश्वास, भेद-भाव, छुआ-छूत, जातीयता जैसी समस्याएं दिखने लगीं उनका निराकरण करके समाज को समुन्नति के मार्ग में आगे बढाने के लिए अमर शहीद महात्मा शुक्रराज शास्त्री आदि युगपुरुषों ने आपना जीवन उत्सर्ग किया था। शुक्रराज के पिता पं. माधव राज जोशी ने 19 वीं शताब्दी के महान् समाजसुधारक, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा प्राप्त कर अपना जीवन समाज के लिए अर्पण किया था। उससे इस देश के इतिहास को नया विचार, चेतना, एवं दृष्टि प्राप्त हुई है । उन्हों ने ही नेपाल में सबसे पहले विक्रम संवत् 1953 में आर्य समाज की स्थापना करके सामाजिक सेवा के अभियान को आगे बढाया था।

इसी सन्दर्भ में वैदिक संस्कृति के यथार्थ स्वरूप की प्रस्तुति के साथ ही सामाजिक जागरण, युवावर्ग में चरित्र और सदाचार के भाव की अभिवृद्धि, भौतिक, बौद्धिक, और आर्थिक विकास के सम्भावनाओं की खोज आदि सामयिक चिन्तन द्वारा संसार में नई चेतना, उत्साह और प्रेरणा का भाव प्रवाहित करने के उद्देश्य से नेपाल आर्य समाज द्वारा नेपाल की राजधानी काठमाडू में तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन किया जा रहा है। वर्ण, लिङ्ग, क्षेत्र आदि के आधार में किसी भेद-भाव विना विश्व के अनेकों देश के हजारों प्रतिनिधियों की सहभागिता में होने वाले इस महासम्मेलन के प्रमुख आकर्षण निम्नानुसार रहेंगे-

- योग, ध्यान शिविर के माध्यम से मानव समुदाय के शारीरिक एवं मानसिक विकास में सहयोग,
- वैदिक यज्ञ द्वारा वातावरण शुद्धि एवं पर्यावरण प्रदूषण के विरुद्ध जन चेतना अभिवृद्धि का व्यावहारिक अभ्यास,
- वैदिक भाषा,और संस्कृति के अध्ययन-अध्यापन की परिस्थिति निर्माण द्वारा नेपाल के प्राचीन गौरव को समुद्घाटित करना,
- गाय के महत्त्व का प्रदर्शन,जैविक खेती की ओर जनमानस की प्रवृत्ति का विकास, गौ वंश का प्रदर्शन आदि में चेतना का विकास,
- हिमालय क्षेत्र की जडि-बूटीयों का वैशिष्टय, प्रशोधन प्रक्रिया आदिके साथ ही जडि-बूटीयों के माध्यम से समृद्धि की सम्भावनाओं का ज्ञान,
- वैदिक संस्कृति के अन्तर्गत विमान विद्या, गणित विद्या, भौतिकी, रसायन शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि व्यावहारिक जीवन की अनेक विधाओं को उच्च स्तर प्रदान करके समुन्नत समाज निर्माण की सम्भावनाओं की प्रस्तुति,
- विश्वभर में फैले हुए वैदिक संस्कृति के उपासक व्यक्तित्वों के बीच में भावनात्मक आत्मीय सम्बन्ध की स्थापना,
- भौतिक विकास में वैदिक संस्कृति से होनेवाले सम्भावित योगदान का व्यावहारिक अभ्यास और प्रदर्शन आदि ।

इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर देश-विदेश के विशिष्ट विद्वान्, उपदेशक, सुधारक, शिक्षासेवी, समाजसेवी आदि समाज के विभिन्न क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों के साथ सम्पर्क एवं व्यावहारिक उपदेश प्राप्त होंगे।

इस महान् कार्यक्रम में सपरिवार, इष्टमित्रों सहित उपस्थित होकर तन-मन-धन एवं कर्म से सहयोग करके पुण्य लाभ प्राप्त करें एवं समुन्नत पवित्र मानव समाज की उन्नति में योगदान करें । इसके लिए आप सबका हार्दिक आह्वान करते हैं ।

**आयोजक**
**नेपाल आर्य समाज**
केन्द्रीय कार्यालय टङ्कप्रसाद मार्ग, वानेश्वर हाइट्स, काठमाडौं-१०
दूरभाष : ००९७७-१-४४९२२६५, इमेल : naryasamaj@yahoo.com
चलभाष : ९८४१६७७७०६ (कमलाकान्त आत्रेय) ९८५१०७७६१३ (डा. तारानाथ मैनाली)
९८४१३०३४४० (डा. माधवप्रसाद उपाध्याय) ९८५११८७२३६ (आचार्य जनार्दन घिमिरे)

सामवेद अथर्ववेद

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.-9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक - **पूनम सूरी**